लोक-कथा-माला—५

कर भला, होगा भला

—मैथिली की लोक-कथाएं—

भगवानचन्द्र 'विनोद'

१९६०
सस्ता साहित्य मंडल-प्रकाशन

स्व० माताजी की पुण्य-स्मृति मे, जिनकी
गोद मे बैठकर बहुत सारी
कथाए सुनी

—विनोद

प्रकाशकीय

हमारे लोक-साहित्य में लोक-कथाओ का बडा ही महत्वपूर्ण स्थान है। उनमे लोक-जीवन की अत्यन्त सजीव तथा मनोरजक झाकी मिल जाती है।

हिंदी तथा उसके परिवार की जनपदीय भाषाओ की लोक-कथाओ से हिंदी के पाठक परिचित हो सकें, इस उद्देश्य से हम इस लोक-कथा-माला का प्रकाशन कर रहे हैं। इसमे अवतक चार पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। पहली मे हिंदी-परिवार की विभिन्न भाषाओ की लोक-कथाए मूल भाषा मे हिंदी-रूपान्तर के साथ दी गई हैं, दूसरी मे ब्रज की लोक-कथाए हैं, तीसरी मे बुदेलखड की और चौथी मे मालवा की।

हमे हर्ष है कि इस पाचवें सग्रह द्वारा मैथिली लोक-कथाए पाठको के हाथो मे पहुच रही हैं। ये कहानिया बडी ही रोचक तथा मनोरजक हैं। अन्य सग्रहो की भाति पुस्तक के अत मे एक कहानी मूल मैथिली भाषा मे भी दे दी गई है।

हमे विश्वास है कि इस माला की अन्य पुस्तको की भाति यह पुस्तक भी लोकप्रिय होगी।

इस माला मे हिंदी-परिवार की सभी जनपदीय भाषाओ की लोक-कथाओ के सग्रह निकाले जायगे। बाद मे भारतीय भाषाओं की लोक-कथाए भी ली जायगी।

—मत्री

दो शब्द

कथाओ का श्रीगणेश उसी समय हुआ, जिस समय धरती पर आदमी पैदा हुआ। कथाओ का पता उस समय से मिलता है, जिस समय से ससार के सर्वप्रथम ग्र थ वेद का आविर्भाव हुआ। उसमे भी कथाए है। फिर उपनिषद् का युग आया। उसमे भी कथाओ के माध्यम से ही दर्शन-शास्त्र के गहन-गभीर विषयो को समझाया गया। पौराणिक ग्रंथ तो कथाओ के भडार ही है।

स्पष्ट है कि कथाओ का सत्कार हमारे यहा चिर सनातन है। जिस समय शुक्रदेव मुनि राजा परीक्षित को श्रीमद्भागवत् की कथा सुनाने बैठे, देवताओ ने स्वर्गलोक से विमान और अमृत का घडा भेजा कि राजा परीक्षित अमृत पीकर अमर हो जाय। उन्हे मृत्यु का भय न रहे। शुक्रदेव मुनि को स्वर्गलोक मे बुलाया कि वहा वह भगवान की लीलाओ की कथा सुनाये। जो हो, यह प्रसग कथा की महत्ता पर महत्वपूर्ण प्रकाश डालता है। देवताओ ने जिस अमृत को बडी कठिनाई से प्राप्त किया था, उसे भी कथा सुनने के लोभ से देने को तैयार हो गये।

मैथिल-जनपद मे लोक-कथा की अजस्र धारा गतिमान दृष्टिगोचर होती है। बच्चा कुछ सोचने-समझने के योग्य होते ही अपनी नानी-दादी की गोद मे बैठकर उससे कहानिया सुनने के लिए मचलने लगता है।

अन्य जनपदो की भाति मैथिल-जनपद मे यह नियम है कि जब-तक कहानी सुननेवाला बीच-बीच मे 'हू-हू' करके हुकारा न भरेगा तब-तक कहानी सुनानेवाले को कहानी कहने मे मजा नही आवेगा।

मैथिली बहुत ही मधुर होने के कारण श्रोताओ को अपनी ओर आकृष्ट करने की सहज क्षमता रखती है और वह कहानी को अत्यन्त रोचक बना देती है। जिस भाव-भगिमा, उमग और उत्साह से कहानी कहनेवाला कहानी आरभ करता है, उससे कहानी अपने-आप आगे बढती जाती है और सुननेवाले ऐसे विभोर हो जाते है कि कभी-कभी घण्टो कहानी चलती है और वे सबकुछ भूलकर कहानी के कल्पना-कानन मे विहार करने लग जाते हैं। उस समय कहानी कहनेवाला अपनी जादू-भरी वाणी के चमत्कार से काम लेने लगता है। वह अपने श्रोताओ को घण्टो तक बाधे रखता है, टस-से-मस नही होने देता। शब्द-पर-शब्द जमाता चला जाता है। समय का घोडा कल्पना-लोक मे सरपट दौडने लगता है। मुहावरेदार भाषा की चटनी वह चखाता चलता है। अगर किस्से मे किसी वीर सेनापति या राजकुमार का प्रसग चल रहा होता है तो श्रोताओ के हृदय मे वीर-रस की भावना सजग हो उठती है। अगर भूत-प्रेत का किस्सा हो तो बालक डर के मारे काप उठते है। परियो की कहानी सुनते समय बालको की आखो मे बिजली की तरह चमक आ जाती है, जैसे वे भी किस्से के राजकुमार की तरह सात समुन्दर पार रहने-वाली परी के देश मे विवाह करने चल पडने की तैयारी मे हो।

हा, मैथिल-जनपद का कहानी सुनानेवाला कहानी कहने के पूर्व एक अजीब लतीफा भी कह सुनाता है—

खिस्सा ऐसी झूठी,
बात ऐसी अनूठी,
कहनेवाला झुट्ठा,
सुननेवाला सच्चा,
आख का देखा नहीं कहता हूं,
कान का सुना कहता हू,
कहनेमाले के सिर पर सोने का छत्तर,
सुननेवाले के सिर पर अस्सी मन का पत्थर,

जागता संसार,
सोता पाक परवल दिगार;
तिसी ऐसा लम्बा,
मसूर ऐसा चौड़ा,
दही की दलदल,
मट्ठे की पहाड,
मक्खी ने मारा लात,
भेज दिया गुजरांत;
एक पियाज मे नौ मन पुच्छी,
हमरे ऐसा खिसक्कड[1] उसमे कितना लटक रहा है !

मैथिल-जनपद की कथाओ का अपना महत्वपूर्ण स्थान है। यहा कथा को 'खिस्सा' कहते है और कथाओ की मौखिकता की ओर संकेत करने के लिए उन्हे 'पेहानी' कहते है। कथाए छोटी-वडी सभी प्रकार की होती है। कभी-कभी कोई किस्सा इतना लम्बा होता है कि सात दिन और सात रात वीत जाने पर भी उसका अन्त नही होता। यहा यह कह देना आवश्यक है कि मैथिल-जनपद मे किस्सा दिन मे नही कहा जाता। लोगो का मानना है कि दिन मे किस्सा कहने से राही राह भूल जाता है और सुननेवाले का मामा अधा हो जाता है। इसलिए माताए तो दिन मे कहानी कहती ही नही।

मैथिली लोक-कथाए गद्य मे कही जाती हैं। कुछ कथाए ऐसी भी होती हैं, जिनमे सस्कृत के चपुओ की भाति गद्य-पद्य दोनो का उपयोग होता है। कहानी कहनेवाला पदो को स्वर मे कहता है और गीतो को मोहक ढग से गाते हुए कहता है। कथाए मैथिली भाषा मे कही जाती हैं, परन्तु उनके अन्तर्गत आये हुए राजा, महाराजा, राजकुमार, सेठ, साहूकार, साधु-महात्मा, फकीर आदि खडी बोली हिन्दी मे बातें करते है।

---

[1] कहानी कहनेवाला

मैथिली लोक-कथाओ को इन भागों मे विभाजित कर सकते है :
(१) देवताओ, दानवो और भूत-प्रेतो की कथाए (२) सृष्टि की कथाए (३) परी की कथाए (४) राजा-रानी की कथाए (५) सिख-चुलिया की कथाए (६) पशु-पक्षी की कथाए (७) व्रत-त्योहार की कथाए (८) बादशाह बीरबल की कथाए (९) पौराणिक कथाए (१०) बुझौवल की कथाए (११) यौन-सबधी कथाए (१२) नीति-कथाए (१३) गोनू ओझा की कथाए (१४) विविध कथाए।

मैथिल-जनपद मे कहानी का अत प्राय इस प्रकार किया जाता है—

'खिस्सा खतम,

पैसा हजम,

खिस्सा गेल बन मे,

समझूं अपना मन मे।'

इस पुस्तक मे मैंने मैथिल-जनपद की कुछ लोक-कथाए चुनकर दी हैं। मुझे विश्वास है कि पाठको को इन कहानियो के पढने मे बडा आनद आवेगा।

—भगवानचद्र 'विनोद'

विषय-सूची

कर भला, होगा भला

: १ :

कर भला, होगा भला

एक ब्राह्मण के सात बहुए थी। छ. के नैहर मे कई भाई-भतीजे थे, किंतु सबसे छोटी के मायके मे कोई न था। जब सावन आया तो सब बहुओ को उनके भाई-भतीजे आकर ले गये। छोटी बेचारी को लेने कोई नही आया। वह मन-ही-मन बहुत दुखी हुई और मकान के पिछवाडे जाकर फफक-फफक-कर रोती हुई कहने लगी—"मेरे लिए नागराज भी तो जगल से नही निकलते, जो मुझे यहा से ले जाते!"

सयोग से नागराज ने उसकी बात सुन ली। उनसे उसका विलाप न देखा गया। उसपर उन्हे बडी दया आई। कुछ रात बीतने पर उसके ससुर के सामने एक आदमी आया। उसकी देह का रग नारगी के छिलके के जैसा था। पाच हाथ लम्बा बदन और चेहरा चमकता हुआ। उसके सिर के बाल खड़े थे और आखे लाल मणि की तरह चमक रही थी। बात-बात मे वह अपनी जीभ बाहर निकालता था।

ब्राह्मण ने उसका परिचय पूछा तो उसने कहा, "आप की छोटी बहू मेरी भानजी लगती है। जब उसका जनम हुआ था, मै परदेस चला गया था। इससे आप लोगो से मेरी जान-पहचान नही हो सकी। मेरी भानजी के मायके मे अब कोई नही रहा, इसलिए मैं उसे विदा कराने आया हू।"

ब्राह्मण को बडा अचरज हुआ, क्योकि उस आदमी से

अबतक कभी भेट नही हुई थी । इसलिए उन्होने घर जाकर छोटी बहू से पूछ लेना ठीक समझा । वह अदर गये और छोटी बहू से बोले, "बहू, तुम्हारे मामा तुम्हे लिवाने आये है। तुम उन्हे जानती हो ?"

छोटी बहू सालो से वहां रहते-रहते तंग आ गई थी। सोचा, चलो, कुछ दिन घूम ही आऊं । तबीयत बहल जायगी। बोली, "हा, मै मामा को जानती हू ।"

मामा ने रात को दूध पिया और धान का लावा खाया। बिदाई की बात पक्की हो जाने पर सब सो गये । सूरज निकलने के पहले ही वे जाने को तैयार हो गये । बहू ने अपने सास-ससुर के पैर छूकर प्रणाम किया । फिर गाव बाहर अपने ग्राम-देवता को सिर झुकाकर वह फुदकती हुई अपने मामा के पीछे चलने लगी । वह बहुत खुश थी । उसके पैरो को मानो पंख लग गये थे । वे चलते रहे, चलते रहे । जब सूरज पच्छिम मे डूबने को हुआ तो वे एक वियाबान जगल मे पहुचे । वहा अचानक रुककर मामा ने पूछा, "तुमको सापो से तो डर नही लगता ?"

छोटी बहू, जिसका नाम मणि था, बोली, "मामा, सांप से किसको डर नही लगता ?"

मामा ने कहा, "पुराने जमाने मे लोग साप से नही डरते थे । आज भी जबतक आदमी उन्हे छेड़ते नही तबतक वे नही बोलते। पहले जमाने मे लोग सापो को नही मारते थे। वे उन्हे भगवान की ही देन समझते थे। भगवान ने सब प्राणियो को एक-दूसरे की भलाई के लिए बनाया है । उस समय सापो का आदर होता था, पूजा होती थी । उन्हे लोग बरसात मे

दूध-लावा खिलाते थे और मजे की बात यह कि उन्हे खिलाकर तब आप खाते थे। उस समय साप भी लोगो का बुरा नही चाहते थे। जब आदमी उनकी जान के गाहक बनने लगे तब वे भी आदमी को नुकसान पहुचाने लगे। खैर, बेटी, तू डरना नही। मै नागराज ही हू। तेरा दु ख मुझसे नही देखा गया और तूने मुझे याद भी किया था, इसलिए तुझे अपने घर नागलोक लिये जा रहा हूं। मै तेरा धरम का मामा हू, तू मेरी भानजी है। अब तेरा अनिष्ट कोई भी नाग नही करेगा। तू जरा भी मत डरना। अब मै अपने असली चोले मे आ रहा हू। आखे मूद-कर तू मेरे फन पर बैठ जाना।"

इतना कहकर नाग ने अपना भयानक रूप धारण कर लिया। मणि पहले तो डरी, फिर हिम्मत करके वह उसके फन पर बैठ गई। कुछ ही क्षण मे वे नागलोक पहुच गये। वहा सबसे मणि की जान-पहचान करादी गई।

कुछ ही दिन मे मणि का रहा-सहा डर भी जाता रहा। नागराज ने सब सापों से कह दिया था कि वे उससे कुछ न कहे, न उसे हैरान करे। सो सब उसे प्यार करने लगे। मणि की मामी नागमती तो उसपर जान ही देने लगी। इस तरह बहुत दिन निकल गये, पर मणि का मन ऊबा नही। कभी वह धामन के साथ हिरनी की तरह कुलाचे भरती तो कभी बच्चो के साथ खेलती।

मणि की मामी बडी नागिन बहुत ही तेज थी। उसका स्वभाव बडा क्रोधी था, लेकिन मणि के साथ उसका व्यवहार बहुत ही नरमाई का रहता था।

कुछ दिनो बाद मणि की मामी ने बहुत-से अडे दिये और कुछ ही दिनो मे बच्चे किलबिल-किलबिल करने लगे। कोई-कोई

बच्चा मणि के मुह मार देता, कोई दूसरी तरह से हैरान करता। मणि को उनसे डर लगने लगा। एक दिन उसने मामी से कहा, "मामी, मुझे इन बच्चो से बहुत ही डर लगता है।"

मामी ने उसे बहुत समझाया-बुझाया। कहा "बेटी, अपने हाथ मे एक दीया लिये रहा करो, तुम्हारा डर जाता रहेगा। रोशनी के डर से ये बच्चे तुम्हारे पास नही आवेगे।"

उस दिन से वह रात को एक दीया अपने हाथ मे लिये रहती। एक दिन कई बच्चे बिना दीये की परवा किये मणि पर झपटे। वह मारे डर के भागी। हाथ से दीया उन बच्चो पर गिर पडा, जिससे कुछ बच्चों की पतली पूछे कटकर अलग हो गई। अपने बच्चों की यह दुर्गति देखकर मामी आग-बबूला होगई और मणि को काटने दौडी। मणि को काटो तो खून नही। भाग्य से उसका मामा उसी समय आ पहुचा और उसने अपनी स्त्री को समझा-बुझाकर शात कर दिया।

कुछ दिनो बाद नागराज मणि को अपने फन पर बिठाकर उसकी ससुराल पहुचा आया।

अगले साल नागपचमी आई। मणि को अपने नाग मामा तथा भाइयो की याद हो आई। स्वर्ग-सा नागलोक उसकी आखो के सामने नाच उठा। वह उठी और मकान का कोना-कोना लीप-पोतकर साफ किया। दीवार पर गोबर से नाग का चित्र बनाया और उसकी पूजा की। फिर वह आचल उठाकर भगवान से अपने नाग मामा और भाइयो की मगल-कामना करने लगी—"हे भगवान, मेरे मामा और भाइयो को अच्छी तरह रखना। उनपर किसी प्रकार की विपदा न आवे।" कहते-कहते उसकी आँखे बद हो गई। उसका हृदय अपने नाग भाइयों की याद

करके रोने लगा।

उधर नाग-लोक मे पूछकटे बच्चो ने बडे होकर अपनी माता से पूछ कटने का कारण पूछा। माता ने सारा हाल कह सुनाया। सुनकर वे लाल-पीले होगये और सब एक स्वर से चीख उठे—"हम इसका बदला लेकर दम लेगे।"

सब-के-सब उसी समय बदला लेने के लिए मणि के यहा के लिए रवाना होगये।

जिस समय वे मणि के घर पहुचे, उस समय वह धरती पर माथा टेके भगवान से नाग-भाइयो के सुख की कामना कर रही थी। क्रोध मे पागल नाग फू-फू करते हुए उसी ओर बढे, पर मणि अपने ध्यान मे लगी रही।

प्रार्थना करके जब मणि ने आखे खोली तो अपने नाग-भाइयो को देखकर उसे बडी प्रसन्नता हुई। उसने झट एक बडी परात मे दूध भर दिया और धान का लावा उसमे डाल दिया। नागो ने पेटभर दूध पिया और लावा खाया। सब प्रसन्नता से नाचने लगे। मणि ने उनसे नागलोक के समाचार पूछे और उनके साथ बडे प्यार का व्यवहार किया। वे भाई आये थे बदला लेने, लेकिन बहन के बर्त्ताव से उनका सारा गुस्सा जाता रहा और उनका हृदय प्रेम से भर उठा। चलते समय उन्होने अपनी बहन को एक मणि-माला दी।

उस दिन के बाद सब अच्छी तरह से रहने लगे।

: २ :

फूलों की सेज

किसी नगर मे एक राजा राज करता था। उसके एक रानी थी। उस रानी को कपडे और गहनो का बड़ा शौक था। कभी सोने का करनफूल चाहिए तो कभी हीरे का हार, कभी मोतियो की माला चाहिए तो कभी कुछ। कपड़ो की तो बात ही निराली थी। भागलपुरी तसर और ढाके की मलमल के बिना उसे चैन नही पडता था। सोने के लिए फूलो की सेज। फूल भी कैसे ? खिले नही, अधखिली कलियां, जो रात मे धीरे-धीरे खिले। नौकर कलिया चुन-चुनकर लाते, दासिया सेज सजाती। एक दिन सयोग से अधखिली कलियो के साथ कुछ खिली कलिया भी आ गई। अब तो रानी की बेचैनी का ठिकाना नही। उनकी पंखुड़िया रानी के शरीर मे चुभने लगी। नीद गायब हो गई। दीपकदेव अपना उजाला फैला रहे थे। रानी की यह दशा देखकर उनसे न रहा गया। बोले, "रानी, अगर कभी मकान बनाते समय राजो को तसले भर-भरकर गिलावा और चूना देने की नौबत आ जाय तो तुम्हे कैसा लगेगा ? क्या तसलो का ढोना इन कलियो से भी ज्यादा अखरेगा ?"

रानी सवाल सुनकर अवाक् रह गई। उसने कोई जवाब नही दिया। परतु तबतक राजा जाग गये थे और उन्होने सारी बात सुन ली थी।

उन्होने रानी से कहा, "रानी, दीपकदेव के सवाल को

आजमा देखो न ।"

रानी राजी हो गई ।

राजा ने काठ का एक कठघरा बनवाया, उसमे रानी को बद कराकर पास की नदी मे बहा दिया । कठघरा बहते-बहते किसी दूसरे नगर मे नदी-किनारे जा लगा। सयोग से वहा राजा का बहनोई राज करता था । वह नदी पर सैर के लिए आया हुआ था । उसने कठघरे को बहते देखा तो निकलवा लिया । खोला तो उसमे एक सुदर स्त्री निकली । रानी के गहने और बढिया कपड़े पहले ही उतार लिये गए थे । वह मोटे-फटे चीथडे पहने हुए थी । राजा उसको पहचान न सका और न रानी ने ही अपना सही पता बताया । राजा ने पूछा, "तुम क्या चाहती हो ?"

रानी ने अपनी इच्छा बताते हुए कहा, "आपका कोई मकान बन रहा हो तो मुझे तसला ढोने का काम दे दीजिये ।"

राजा का नया महल बन रहा था, सो उसने रानी को तसला ढोने के काम पर लगा दिया । रानी दिनभर तसला ढोती और मजदूरी के जो पैसे मिलते उनसे अपनी गुजर कर लेती । दिनभर की कडी मेहनत के बाद जो रूखा-सूखा मिलता, वही उसे बडा अच्छा लगता और रात को खुरदरी चटाई पर उसे ऐसी नीद आती कि पता न चलता, कब रात निकल गई । बड़े तड़के वह उठ जाती और तैयार होकर बड़ी उमंग के साथ अपने काम मे जुट जाती ।

इस तरह काम करते-करते बहुत दिन बीत गये । दैवयोग से एक बार उसका पति अपने बहनोई के यहा आया । बिना रानी के उसका मन नही लगता था । बहनोई के नये महल

को देखने गया तो अचानक उसकी निगाह रानी पर पडी। उसने झट उसे पहचान लिया। मेहनत-मजूरी करने से रानी का रंग कुछ सावला हो गया था, पर बदन कस गया था। रानी ने भी राजा को पहचान लिया।

राजा ने उसके पास जाकर पूछा, "कहो, तसलो का ढोना कैसा लग रहा है ?"

रानी ने कहा, "कलिया देह मे गडती थी, पर तसले नही गड़ते।"

राजा के बहनोई ने दोनों की बात सुनी। उन्हे बडा अचभा हुआ। उन्होने पूछा, "क्या बात है ?" राजा ने सारा हाल कह-सुनाया। सुनकर बहनोई को बडी लज्जा आई। उसने रानी को काम से छुट्टी दे दी। वे दोनों अपने राज्य मे लौट आये।

कुछ दिनो के बाद राजा ने रानी से पूछा—"रानी, अब कैसा लगता है ?"

रानी ने कहा, "स्वामी, वह आनंद कहा ? आलस्य बढ़ता जा रहा है। डर लगता है, कही कलिया फिर से न गडने लगें।"

राजा ने कहा, "ऐसा है रानी, तो हम एक काम क्यो न करें। दोनो मिलकर दिनभर मजूरी किया करे, रात को कलियो की सेज पर सोया करे। ठीक है न ?"

रानी ने कहा, "मजूरी करेगे तो फिर कलियो की कोई दरकार ही नही रह जायगी। योंही नीद आ जाया करेगी।"

उस दिन से राजा और रानी मेहनत-मजूरी करने लगे और उनका जीवन बडे सुख और आनद से बीतने लगा।

३ :

सीता और लव-कुश

सीता के एक ननद थी। एक दिन उसने सीता से कहा, "भौजी, तुम बारह बरस तक रावण के यहा अशोक-वाटिका में रही। अच्छा, यह बताओ कि रावण का रूप-रग कैसा था ? जरा उसका एक चित्र बनाकर दिखाओ।"

सीता बोली, "बारह बरस मै वहां रही जरूर, परन्तु मैंने रावण तो दूर, उसकी परछाईं तक नही देखी।"

पर ननद के बहुत आग्रह करने पर सीता ने चित्र बनाना शुरू किया। हाथ बनाये, पैर बनाये। जब आखे बनाने लगी तो उधर से राम आ गये। सीता ने उस चित्र को आचल मे छिपा लिया।

राम भोजन करने लगे तो उनकी बहन ने कहा, "भैया, भौजी तो रावण के विरह मे उसका चित्र बनाया करती हैं। देखो न।"

इतना कहकर उसने सीता के आचल से चित्र निकालकर दिखा दिया। राम बहुत दुखी हुए। उन्होने लक्ष्मण को बुलाकर कहा, "लक्ष्मण, सीता को साथ ले जाओ और वन मे छोड़ आओ। उनका मन तो रावण मे लगा है।"

लक्ष्मण ने कहा, "यह कैसे हो सकता है ! भाभी गर्भवती हैं। मै उन्हे किस तरह घर से निकालू ?"

राम का चेहरा तमतमा आया। क्रुद्ध होकर बोले, "नही,

तुम्हे जाना ही होगा ।"

राम की इस आज्ञा से लक्ष्मण बहुत दुखी हुए। वह सीता के पास गये और बोले, "भाभी, तुम्हारे नैहर से सदेसा आया है । तुम्हे बुलाया है । हम लोग कल चलेंगे ।"

यह सुनकर सीता बोली, "हे लक्ष्मण, मेरे नैहर मे अब कौन रह गया है ? न मेरे पिता हैं, न माता । भला मुझे कौन बुलावा भेजेगा ?"

सीता महारानी तो तीनो लोक की बात जानती थी। वह सब जान गईं । उन्होने ननद को शाप दिया, "नदी-पोखर तुम्हारे लिए सब सूख जायेंगे और तुम्हे पीने को पानी तक न मिलेगा । तुम टिटहरी बन जाओगी । उल्टी होकर सोओगी ।"

सीता के यह शाप देते ही ननद टिटहरी बन गई । अगले दिन सीता शृंगार करके तैयार होगईं और लक्ष्मण के साथ रथ पर जा बैठी ।

सीता ने आंचल मे सरसो भर ली । उसे रास्ते मे बिखेरती गईं और कहती गईं, "हे सरसो, इसी रास्ते से लक्ष्मण लौटेंगे । जो हुआ, उसमे उनका कोई दोष नही है। तुम फैली रहना, जिससे उन्हे रास्ते का पता रहे और वह अच्छी तरह से घर आ जायं ।"

लक्ष्मण और सीता एक वन मे पहुंचे, दूसरे मे गये, फिर तीसरे में । अब सीता को प्यास लगी । वह लक्ष्मण से बोली, "लक्ष्मण, मुझे बड़ी प्यास लगी है । गला सूखा जा रहा है । कही से थोड़ा पानी लाकर पिलाओ ।"

लक्ष्मण ने कहा, "भाभी, तुम इस चंदन के पेड़ की छाया मे बैठो । मै पानी खोजने जाता हूं ।"

शीतल हवा चल रही थी। चंदन के पेड की छाया में सीता प्यास के मारे मूच्छित हो गईं। लक्ष्मरण ने कदंब के पत्ते तोडे और दोना बनाकर उसमे पानी भरकर रख दिया। फिर सीता को बेहोश पडा छोड़कर अयोध्या को चले गये। सीता को जब होश आया, तो वह चौंककर उठ बैठी। अपने को अकेली देखकर बोली, "हाय, लक्ष्मरण कहा गये ? जाते समय मुझे जगाया तक भी नही! मैं उन्हे आखें भरकर देख तो लेती और स्वामी को उनके हाथ सदेसा भेज देती।"

वहा से सीता एक साधु की कुटिया मे गई। साधु ने उन्हे अपने पास रख लिया। वहीपर सीता के एक पुत्र हुआ। पुत्र को साधु की कुटिया मे सुलाकर सीता वन मे घूमने चली जाया करती थी। एक दिन ऐसा हुआ कि साधु से विना कहे वह अपने पुत्र को गोदी मे लेकर जंगल मे घूमने चली गई। साधु ने खाट पर बच्चे को न देखा तो खोजा, पर वह न मिला। उसने मन मे सोचा, "सीता को बहुत दुख होगा। उसका बच्चा न जाने कौन ले गया। भेडिया ले गया, गीदड़ ले गया, या क्या हुआ ?" इसके बाद साधु ने कुश ली और उसका लडका बनाकर खाट पर सुला दिया। बोले, "हे भगवान, इसमे प्राण भर दो, नही तो सीता आवेगी तो वह बहुत हैरान होगी।"

भगवान ने साधु की बात मान ली और उसमे प्राण डाल दिये। लड़का खाट पर पड़ा-पडा रोने लगा।

सीता जब लौटी तो देखती क्या हैं कि बिस्तर पर पडा कोई बालक रो रहा है। उन्होने साधु के पास जाकर पूछा,

"बाबा, यह किसका लडका है ? मै तो अपना बच्चा साथ ले गई थी। यह कहा से आया ?"

साधु को उसकी बात सुनकर अचरज हुआ। पर बोला, "यह भी तुम्हारा ही लडका है। मुझे खबर नही थी। अब तुम्ही इसको भी पालो। जो लडका तुम्हारी नाल से पैदा हुआ है, उसका नाम 'लाभ' (लव) होगा और कुश से पैदा होने के कारण इसका नाम 'कुश' होगा। दोनों तुम्हारे ही बेटे हुए।"

सीता माता दोनो पुत्रों को पालने-पोसने लगी। धीरे-धीरे दोनो सयाने हो गये। दोनो खेलते, खाते और जगल मे शिकार करते।

एक दिन संयोग से राम उस जगल मे आ पहुंचे। उन्होंने बालकों को जगल मे शिकार खेलते हुए देखा। उनका रूप-रंग देखकर वह मुग्ध हो गये। पूछा, "बच्चो, तुम दोनों का क्या नाम है और तुम्हारे माता-पिता कौन है ?"

दोनो लडको ने जवाब दिया, "हम दोनों का नाम लव और कुश है। हम लोग अपने पिता का नाम नही जानते, परंतु माता का नाम सीता है।"

राम ने कहा, "बच्चो, मुझे वहा ले चलो, जहा तुम्हारी माता रहती हैं।"

दोनों भाई उन्हे अपनी कुटिया मे ले गये और अपनी माता से जाकर बोले, "मा, तू अपना सिर ढक ले। बाहर द्वार पर रामजी खडे है। वह तुझे बुलाते है।"

सीता माता ने कुछ जवाब नहीं दिया। उनकी आखें डबडबा आईं। उन्होने मन-ही-मन धरती माता को प्रणाम कर

कहा, "हे धरती माता, तुम फट जाओ। मै उसमे समा जाऊ। ऐसे पुरुष का मैं मुह नही देखना चाहती, जिसने बिना अपराध के गर्भवती नारी को वनवास दे दिया।"

धरती माता फट गई। सीता उसमे समा गईं और राम पत्थर बनकर द्वार पर खडे रहे।

: ४ :

चार कवि

किसी नगर मे चार ब्राह्मण रहते थे। चारों बहुत ही गरीब थे और पढने-लिखने के नाम पर उनके लिए काला अक्षर भैंस बराबर था। खाने-पीने की तगी रहती थी। छोटा-मोटा काम वे करना नही चाहते थे। ब्राह्मण जो ठहरे! एक दिन चारो ने सोचा कि किसी दूसरे राजा के यहा चलें और तरकीब से दान-दक्षिणा ले। तभी कुछ दिन चैन से कटेगे। इस कलयुग में यहां तो कोई दान देने से रहा। वैसे भी कहा है न—"घर का जोगी जोगना आन गांव का सिद्ध।" सो तय हुआ कि राजा भोज के दरबार मे चला जाय। वहा जो कोई भी जाता है, खाली हाथ लौटकर नही आता।

ऐसा निश्चय कर चारो जने चल पडे। रास्ते मे उन्होने सोचा कि कोई ऐसा कवित्त बनाकर ले चलना चाहिए, जिससे राजा खुश हो जाय और अच्छा इनाम दे दे। चलते-चलते चारो एक जंगल मे पहुचे। भूख-प्यास के मारे बहुत व्याकुल हो गये थे। जगल मे उन्हे जामुन का एक पेड मिला। उसपर पकी जामुनें देखकर चारों बहुत खुश हुए। बोले, "जामुनो से ही भूख मिटाई जाय, फिर कुछ देर यही आराम करने के बाद आगे चलें।"

चारों ने जी भरकर जामुने खाईं। इतने मे एक ने कहा, "वाह जी वाह, हमारा तो कवित्त भी बन गया!"

सबने उत्सुकता से कहा, "अच्छा, सुनो।"

पहले ने कहा, "सुनो—जामुन अत न पाई।"[1]

इसके बाद चारो थोडा आराम करके वहां से चल पडे। चलते-चलते बहुत दूर निकल जाने पर सडक के किनारे उन्हे बड का पेड मिला। चारों वहा सुस्ताने के लिए बैठ गये। धूप इतनी कड़ी थी कि चिड़िया भी दाना चुगना छोडकर उस पेड़ पर आ बैठी थी। वे चीची कर रही थी और एक डाली से उड़कर दूसरी पर जाकर आपस मे लड भी रही थी।

यह देखकर दूसरा ब्राह्मण उछल पडा। बोला, "यह लो, हमारा भी कवित्त बन गया।"

तीनो के पूछने पर उसने कहा,—"क्या कहे, बडी बढिया चीज़ बनी है। बरा तरी मच गै रार!"[2]

वहा से उठकर चारो जने फिर आगे बढें। चलते-चलते रास्ते मे गूलर का पेड मिला। चारों ने सोचा कि चलो, कही पके गूलर हो तो खाते चले। वहा पहुंचने पर एक भी गूलर नही मिला। निराश होकर चलने लगे कि तीसरे ने कहा—"ठहरो जी, हैरान होने की कोई बात नही है। हमारा भी कवित्त बन गया!"

तीनो के पूछने पर उसने सुनाया—"ऊमर रहै निभर गै।"[3]

इसके बाद वे सब वहा से चल पड़े। अब चौथा ब्राह्मण बडी चिंता मे पड गया कि सबने कवित्त बना लिये, वही रह गया। यही सोचता वह जा रहा था कि इतने मे गाव की एक स्त्री

---

[1] ऐसी जामुन तो कभी खाने को मिली ही नही

[2] वट के पेड पर झगडा हो गया है।

[3] गूलर के फल-फूल सब झड गये।

टोकरी मे पीपल बीनकर लिये जा रही थी। चौथे ने पूछा, "अरी बहन, क्या लिये जा रही है ?"

"पीपर बीछकर लाई हू।" उसने जवाब दिया।

बस ! चौथा उछल पडा, बोला, "वाह क्या कहना ! यह लो, मैने भी बाजी मार ली। मेरा भी कवित्त बन गया—"पीपर लाई नार।"[1]

अब क्या था। चारो हँसी-खुशी से मांगते-खाते कुछ दिनो के बाद राजा भोज के दरबार मे पहुचे। राजा को खबर भैजी कि हम चार कवि नया कवित्त सुनाने आये है। राजा भोज ने उन्हे बड़े आदर-सत्कार के साथ ठहराने की आज्ञा दी। चारों का खूब स्वागत हुआ। दूसरे दिन दरबार लगा। चारो कवि बुलाये गए। राजा ने उनका अभिनदन करते हुए कहा, "अब आप लोग अपना-अपना कवित्त सुनाइये।" चारों मे से एक ने कहा, "राजन, हम आपको अधिक कष्ट नही देगे। बुद्धिमानों का काम है थोडा सुनना, ज्यादा समझना। अब आप हमारे कवित्त सुनिये।

पहला—"जामुन अत न पाई।"
दूसरा—"वरा तरी मच गै रार।"
तीसरा—"ऊमर रहै निझर गै।"
चौथा—"पीपर लाई नार।"

सुनकर राजा और दरबारी कवि सब चकित हो गये। एक-दूसरे का मुह ताकने लगे। आपस मे काना-फूसी करने लगे। अभी तक दरबार मे इतने कवि आये, पर ऐसे कवियों

[1] नारी पीपल चुन लाई है।

का कभी आगमन नहीं हुआ । राजा भोज स्वय उनके कवित्त को नही समझ सके । पर अपनी नादानी कैसे प्रकट करते ! उन्होने बहुत-सा दान-दक्षिणा देकर चारो को विदा किया ।

धन लेकर वे चारो हँसी-खुशी से घर की ओर चल दिये । उधर राजा भोज बडे बेचैन और चिंतित थे कि जो कवित्त सुनाये गए उनका अर्थ क्या है ? बहुत सोचने पर भी जब उनकी समझ मे कुछ न आया तो उन्होने महाकवि कालिदास को बुलवाया ।

कालिदास ने राजा को उदास देखकर पूछा—"राजन, आप इतने चिंतित क्यो हैं ?"

राजा ने कहा, "अभी चार कवि कवित्त सुनाकर चले गये है । उनका अर्थ दरबारियो की समझ मे नही आ रहा है । स्वय मै भी हैरान हू । उनका अर्थ बड़ा ही गूढ मालूम पडता है । कवित्त ये है :

जामुन अत न पाई ।
बरा तरी मच गै रार ॥
ऊमर रहै निझर गै ।
पीपर लाई नार ॥

सुनकर कालिदास ने कहा, "राजन, इनका अर्थ तो साफ है । मदोदरी रावण को समझा रही है कि हे स्वामी, आप किससे लड रहे है ?—'जामुन अत न पाई'—अर्थात्, जिसका ऋषि-मुनियो ने कभी अत नही पाया, उससे 'बरा तरी मच गै रार' आपने आज बराबरी करके झगडना शुरू किया है । सो, हे प्राणनाथ, 'ऊमर रहै निझर गै' आपके उम्र-रूपी पेड

के फल गिर गये, अर्थात् अब आप अधिक दिन जीवित नहीं रह सकते क्योंकि 'पीपर लाई नार'—हे प्रियतम, आप दूसरे की नारी को उडाकर अपने घर लाये है।"

यह सुनकर राजा भोज बहुत प्रसन्न हुआ और उन चारों कवियों की उसने बड़ी प्रशंसा की।

: ५ :

भाइयों का प्रेम

किसी गाव मे एक किसान रहता था। उसके दो बेटे थे। बडे बेटे का ब्याह हो गया था और उसके दो-चार बच्चे भी थे। छोटा अभी कुवारा था। किसान ने यह सोचकर कि उसके मरने पर आपस मे झगडा न हो, अपनी धन-दौलत, माल-मता अपने सामने ही दोनो मे बराबर-बराबर बाट दिये। जब वह मरा तो उसके दिल मे सतोप था कि दोनो भाई आपस मे प्रेम से रहेगे।

और सचमुच वे हिल-मिलकर ही रहने लगे। खूब मेहनत करते थे। हर भाई के दिल मे यह भावना रहती थी कि मै चाहे जैसे रहू, पर मेरे भाई को किसी तरह की तकलीफ न होने पाये। वह आराम से रहे।

एक साल दोनो भाइयो के खेत मे अगहनी फसल हुई। धान की फसल से दोनो के खलिहान भर गये। देखनेवाले देखते ही रह गये।

दोनो भाई खलिहान पर ही सोते थे। एक रात को अचानक छोटे भाई के मन मे विचार आया कि मै कैसा कठोर दिल का आदमी हू। कितना मतलबी हू। मेरे अभी खानेवाला ही कौन है कि इतना सारा धान ढोकर अपने घर ले जाऊं! हा, भाई के कई बाल-बच्चे है। उनको खाने-पीने की दिक्कत रहती है। क्यो न मै अपने खलिहान से कुछ बोझा भाई के

खलिहान मे रख आऊं ? इतना सोच छोटा भाई उठा और अपने खलिहान से एक सोरही[1] धान का बोझा उठाकर भाई के खलिहान मे रख आया। फिर आकर चुपचाप सो गया।

सयोग से बड़े भाई के दिल मे भी यही बात उठी। उसने भी सोचा कि मै कितना स्वार्थी हू। चैन से खाता-पीता हू और छोटे भाई की ओर कभी देखता तक नही कि वह भरपेट खाता है या भूखा रहता है। अकेली जान होने पर भी दिन-भर हाय-हाय करता रहता है। मेरे तो बाल-बच्चे हैं। भगवान की दया हुई तो वे सब कुछ दिनो मे जवान हो जायंगे और कमाने लगेगे। चारो ओर से घर भर जायगा। मगर इस छोटे भाई का तो कोई भी नही है। बड़ा भाई बाप के बराबर होता है। क्यों न मै अपने खलिहान से कुछ बोझे उठाकर उसके खलिहान मे रख आऊ ?

सो वह भी अपने खलिहान से एक सोरही धान का बोझा उठाकर जल्दी-जल्दी अपने छोटे भाई के खलिहान मे रख आया। उसे डर था कि भाई ने देख लिया तो वह हरगिज नही लेगा।

दिन निकलने पर छोटे भाई ने अपने खलिहान के बोझो की गिनती की तो यह देखकर दग रह गया कि उनमे एक भी कम नही हुआ। उधर बड़ा भाई भी यह देखकर दग रह गया कि उसके बोझो मे से भी एक बोझा तक कम नही हुआ। दूसरी रात को भी दोनो भाई उसी तरह चोरी-चोरी एक-एक सोरही

[1] सोलह बोझे की एक सोरही होती है।

धान का बोझा पहुचा आये। सबेरे दोनो के बोझे फिर बराबर पाये गए।

इस प्रकार यह खेल कई रात तक चलता रहा। आखिर एक रात जब दोनो जने अपने-अपने खलिहान से बोझा उठाये जा रहे थे तो दैवयोग से दोनो एक-दूसरे से टकरा गये। ज्योही उन्होने एक-दूसरे को पहचाना, बोझा फेककर आपस मे चिपट गये। आखो से आसू बरसने लगे। खलिहान मे बोझो की सख्या क्यो नही घटती थी, यह भेद बिना कहे-सुने ही खुल गया।

दोनो भाइयो की आखों से प्रेम के आसुओ की धारा बह निकली। उससे नीचे पड़ा हुआ पीपल का एक बीज भीग गया, उसमे अकुर फूट आया और कुछ दिन मे वह बडा पेड़ हो गया। वह पेड़ आज भी मौजूद है। लोग कहते है कि उसकी हवा दूसरे पेडो से अधिक ठण्डी है, क्योकि उसका जन्म प्रेम के आसुओ से हुआ है।

: ६ :

डेढ़ बितना

किसी गांव मे एक बुढ़िया रहती थी। उसके एक छोटा-सा लड़का था। उसकी ऊंचाई कुल डेढ बित्ता थी। इसलिए लोग उसे 'डेढ बितना' कहकर पुकारते थे। उसके पिता नही थे। मा पास-पड़ौस मे पिसाई-कुटाई करके अपनी गुजर-बसर करती थी। डेढ़ बितना रोज मदरसे मे पढने जाता था। पर उसके पास न पट्टी थी, न किताब। वह जैसे-तैसे अ-आ, इ-ई, सीख गया था। पास मे पैसे नही थे कि किताब खरीद सके। जिस समय डेढ बितना पैदा हुआ था, उसकी नानी ने उसे एक बछिया दी थी। उस बात को कई बरस हो गये थे। बछिया अब गाय हो गई, पर दैवयोग से वह बांझ निकली।

एक दिन डेढ़ बितना मदरसे से रोता हुआ आया। मा ने पूछा, "क्या बात है, बेटा ? क्यों रोते हो ?"

डेढ़ बितना बोला, "मां, गुरुजी ने मुझे मारा है। कहते हैं, किताब नही है तो मदरसे मे क्यों आते हो ? मुझे किताब खरीदवा दो तब मदरसे जाऊंगा।"

मा ने कहा, "बेटा, मेरे पास पैसे कहा है ? पिसाई-कुटाई करके लाती हूं। किसी तरह पेट की आग बुझा पाती हू। गाय का आसरा था। सोचती थी कि दूध देने लगेगी तो सारा दुःख दूर हो जायगा। मगर करम की गति कौन जानता

है ! इसे तो कोई अब दो कौड़ी मे भी नही खरीदेगा । उल्टे यह गले का बोझ बन रही है । बेटा, मेरे-तेरे भाग्य मे सुख लिखा ही नही है । दु ख-ही-दु ख बदा है । दर्जी का फाड़ा कपडा तो सीया जा सकता है, पर बेटा दैव का फाड़ा कैसे सीया जाय ? इस गाय को तू लेजा और जगल मे कही किसी पेड से बांध आ । कोई बाघ आकर इसे खा जायगा । बरसात आ रही है । क्या तो इसे खिलाओगे और कहा इसे बाधोगे ? अच्छा यही है कि इससे पीछा छुडा लो ।"

मा की बात डेढ बितना को जच गई और वह गाय को हाककर जगल मे ले गया । वहा पहुचकर उसने एक मोटे-से पेड के तने मे गाय को बाध दिया और जैसे ही घर की ओर चलने को हुआ कि एक बुढिया उस पेड के पास से गुजरी । वह बुढिया बडी धार्मिक थी । हमेशा जंगल मे घूमती रहती थी और चिडियो तथा दूसरे पशु-पक्षियों की खोज-खबर लेती रहती थी । वह गाय को खोलकर अपने घर ले गई ।

डेढ बितना ने यह देखा और घर की ओर चल दिया । रास्ते मे उसे एक गौरैया पडी हुई दिखाई दी । उसकी एक टाग टूट गई थी । न तो वह चल सकती थी, न उड सकती थी । डेढ़ बितना को उसकी दशा देखकर दया आ गई । बोला. "हाय, बेचारी की टाग टूट गई है ! अगर कोई गाड़ी इधर से आ जाय तो इसका क्या हाल होगा ? पहिये के नीचे कुचलकर मर जायगी !" इसके बाद उसने बडी सावधानी से उसे उठाकर अपनी धोती मे लपेट लिया । घर पहुंचकर उसने मां को सब हाल सुना दिया ।

मा ने डाटते हुए कहा, "यह क्या वला ले आया है ! इसके लिए चुगा कहां से लायेगा ? डाल दे इसे बिल्ली के आगे ।"

डेढ बितना बोला, "नही मा, जबतक इसकी टाग ठीक नही हो जायगी और इसमे उड़ने की ताकत नही आजायगी, तबतक मै इसे पालूगा । फिर उडा दूगा । देखो तो, कैसी वढिया है !"

डेढ वितना कुम्हार के यहा से एक फूटा घडा माग लाया । उसमे छोटे-छोटे छेद करके उसने मुलायम घास बिछाई और गौरैया को उसमे रख दिया । रोज वह उसे चारा-दाना देता और पानी पिलाकर उसके घर मे रख देता । जिस दिन घर मे मा-बेटे के खाने का ठिकाना न रहता, उस दिन गौरैया भी भूखी रहती ।

कुछ दिन मे गौरैया की टाग ठीक हो गई । एक दिन वह घडे से चुपचाप उड़ गई और सीधी उस भली बुढिया के पास पहुची, जो जगल मे रहती थी । गौरैया जाकर बुढ़िया के कंधे पर वैठ गई । उस समय बुढिया दो छोटे-छोटे बछडों की देह सहला रही थी । उसने पूछा, "तू इतने दिनों से कहा चली गई थी ?"

गौरैया ने सारी आपबीती सुना दी । कहानी सुना चुकने पर गौरैया ने पूछा, "ये नन्हे-नन्हे बछडे किसके है ?"

बुढिया बोली, "उस गाय के है, जो कदम के पेड के नीचे बैठी जुगाली कर रही है ।"

गौरैया ने पूछा, "वह कहा से आई ?"

बुढिया ने कहा, "पेड से बंधी हुई मिली । मैने सोचा,

इसे कोई सिंह खा जायगा, सो मै इसे यहा ले आई। जब कभी इसका मालिक इसे खोजता हुआ इधर आयगा, उसे दे दूगी। लेकिन अभी तक कोई आया नही। देखो तो, इसने कितने सुन्दर बछडो को जनम दिया है!"

गौरैया उड-उडकर बछडो के ऊपर मडराने लगी और अपने पखो से उनकी देह गुदगुदाने लगी। गाय ने यह देखा तो अपनी पूंछ उठाकर भडक उठी और गौरैया को भगाने लगी।

.. ..

कई दिन बीत गये। एक दिन डेढ बितना ने अपनी मा से कहा, "मा, मै जगल मे जाता हू। देखूं, उस गाय का क्या हुआ। मुझे बड़ा दु ख है कि मैं उसे वहां छोड आया।

मा बोली, "अच्छा बेटा, अगर तेरी इच्छा है तो जगल मे जाकर देख आ।"

डेढ बितना जंगल मे जा पहुचा। दिनभर वह गाय को ढूंढता रहा, पर उसका पता न लगा। जब रात हुई तो वह जगल के बहुत ही घने हिस्से मे पहुच गया।

अंधेरे मे उसे डर लगने लगा, क्योकि अभी वह छोटा ही तो था। वह रोने लगा। इतने मे उसे पेड़ो के बीच से कुछ दूर पर एक टिमटिमाती रोशनी दिखाई पडी। वह उसी तरफ बढने लगा। थोडी देर बाद एक खुले मैदान मे पहुचकर देखता क्या है कि वहां एक छोटी-सी झोंपडी बनी हुई है। उसमे वही गाय बैठी जुगाली कर रही थी और उसकी बगल मे दो बछडे बैठे हुए थे।

"नानी-नानी, जल्दी बाहर आओ।" गौरैया ने चहककर

कहा, "देखो, यह वही लडका आया है, जिसने मेरी जान बचाई थी।"

बुढिया बोली, "कौन लड़का ?"

गौरैया बोली, "वही, जो मुझे रास्ते मे पडा हुआ देखकर अपने घर ले गया था।"

बुढिया बाहर निकली। उसने लड़के को प्यार से बिठाया। पैर धोने के लिए लोटे मे पानी दिया और खाने के लिए अच्छी-अच्छी चीजे दी। सोने के लिए घास पर कम्बल बिछा दिया। अगले दिन वह बहुत सवेरे उठी और डेढ़ बितना से बोली, "बेटा, बाजार मे चले जाओ। इस गाय को बेच देना और बछड़ो को रख लेना। गाय बेचकर जितने पैसे मिले, उनसे एक लोहे की गाड़ी और एक लोहे का हल खरीद लेना। फिर बछड़ो को गाडी मे जोत लेना। वे हैं तो छोटे, पर बडे मजबूत हैं। तुम्हारी गाडी को बडी तेजी से खीच ले जायेंगे।"

डेढ बितना ने वैसा ही किया। उस दिन रात को वह लोहे की गाडी और लोहे का हल लेकर घर गया। बछडे बडी शान से गाडी को खीच रहे थे।

जिस समय वह अपने घर पहुंचकर बछड़ो को खोल रहा था, एक आदमी डुग्गी पीटकर कह रहा था—"राजा के पास एक खेत है, जिसमे गेहू बोया जायगा। जो कोई उस खेत को एक दिन मे जोतकर तैयार कर देगा, उसे मुह-मागा इनाम दिया जायगा। अगर खेत नही जोता जा सकेगा तो उसे छ: महीने की कैद भुगतनी होगी और कोल्हू पेरना होगा।"

अगले दिन सबेरे डेढ बितना हल मे बछड़ों को जोतकर चलने को तैयार हुआ। मा ने पूछा, "कहा जाते हो ?"

डेढ बितना बोला, "राजा का खेत जोतने।"

मा ने कहा, "क्या करोगे जाकर? तुम्हारे बछडे छोटे हैं। तुम खेत नही जोत पाओगे। वहा की जमीन लोहे की तरह कडी है और राजा बडा बुरा है। वह लोगो को लालच देकर अपना काम करवा लेता है और फिर उन्हे कडी सजा भी देता है।"

डेढ बितना बोला, "मां, तुम डरो नही। मेरा हल लोहे का है। मै जरूर इनाम लेकर छोडूगा।"

इतना कहकर डेढ बितना दौडा-दौडा गया। खेत मे पहुचते ही उसने अपना लोहे का हल उतारा और बछडो को उसमे जोत दिया। थोडी देर मे राजा की सवारी उधर से निकली।

राजा ने पूछा, "ओ लडके, तू यहा क्या कर रहा है?"

डेढ बितना बोला, "आपका खेत जोत रहा हू।"

राजा ने डाटते हुए कहा, "जाओ यहा से। यह काम तुम्हारे और इन बछडों के बस का नही है।"

डेढ बितना बोला, "आप देख लीजियेगा।"

इतना कहकर वह तेजी से हल चलाने लगा। मस्त होकर वह बिरहा गाता जा रहा था। बडी मुस्तैदी से उसने सारा खेत जोत डाला। बहुत थोडी जमीन बाकी रही। यह देखकर राजा का हाल-बेहाल हो गया। वह तो चाहता था कि काम-का-काम हो जाय और इनाम भी न देना पडे। वह लडका तो इनाम लेने पर तुला था और उसका काम पूरा होने-वाला था।

राजा महल मे आया और उसने डेढ बितना पर जादू

चलाने के लिए एक डायन को भेजा। डायन खेत पर गई और बालक से बड़े प्यार से बोली, "भैया, अब बस करो। काम करते-करते थक गये हो। थोडी देर आराम कर लो। चाद-सा मुखड़ा कैसा कुम्हला गया है! अब तो थोड़ा-सा ही काम रह गया है। कभी भी खत्म हो जायगा। आओ, मैं तुम्हे एक बड़ी अच्छी कहानी सुनाती हू।"

बालक उसकी मीठी बातो मे आ गया। बालको को वैसे भी कहानिया बड़ी प्यारी लगती हैं। उसने बछड़ो को रोक दिया और एक लीक पर आकर डायन के आचल की छाया मे बैठ गया। डायन ने कहानी शुरू की—एक था राजा. ।"

कहानी ज्यो-ज्यों आगे बढती गई, बालक पर नीद का असर पडता गया और वह थोडी देर मे सो गया।

डायन ने देखा कि उसकी चाल सफल हो गई। वह बडी खुश होकर वहां से भाग गई। उसका अदाज था कि बालक जबतक उठेगा, दिन छिप जायगा। लेकिन वैसा हुआ नही। डेढ़ बितना के दिल मे लगन लगी थी कि कैसे ही काम पूरा करके इनाम लेना चाहिए। सो कुछ ही देर बाद उसकी आख खुल गई और दिन छिपे कि उससे पहले ही उसने बाकी का काम निबटा दिया।

सूरज डूबने पर जब राजा आया तो देखता क्या है कि सारा खेत जुत गया है और डेढ बितना अपने बछडों की पीठ पर हाथ फेरता हुआ उन्हे शाबासी दे-देकर मुस्करा रहा है।

राजा हार गया और उसे डेढ बितना को मुंहमागा इनाम देना पडा।

: ७ :

मूरख अहीर

किसी गाव मे एक अहीर और उसकी स्त्री रहते थे। दोनों खेती-बारी कर अपनी गुजर-बसर करते थे। एक दिन की बात कि अहीर ने कुछ चने की दाल धूप मे सूखने रख दी और पेड के नीचे बैठकर कौओ से उसकी रक्षा करने लगा। थोडी देर मे उसे प्यास लगी। वह जैसे ही पानी पीने गया कि इतने मे अचानक एक कौआ आया और दाल चुन-चुनकर खाने लगा। अहीर ने लौटकर देखा तो चिल्लाता हुआ लाठी से कौवे को मारने दौडा। कौआ उडकर पास के पेड़ पर जा बैठा।

अहीर हाथ मल-मलकर पछताने लगा—ओह, कौआ उड गया। अब इससे बदला कैसे लिया जाय? अत मे उसने एक उपाय सोचा कि अगर पेड को कटवा दिया जाय तो पेड गिर पडेगा और तब कौवे को आसानी से पकडकर उसकी मरम्मत की जा सकेगी। यह विचार मन मे आते ही वह बहुत खुश हुआ और बढई को बुलाने चल दिया।

इधर कौवे को पूरी आजादी मिल गई। उसने काव-काव-कर अपने बहुत-से साथियो को बुला लिया और लगा मौज से खाने। सयोग से उसी समय अहीर की स्त्री वहा से निकली। यह तमाशा देखकर वह शोर मचाने लगी। बहुत-सी दाल कौओ ने साफ कर दी थी। अपने पति की नादानी पर वह दात पीस-कर रह गई। बची-खुची दाल समेटकर उठा ली और अपना

क्रोध झाड़ती हुई बोली, "आज घर आवे तो सही, ऐसी खबर लूगी कि याद रखेगे ।"

उधर अहीर झीकता हुआ बढई के पास गया । बोला, "भाई, मेरे दरवाजे का पेड काट दो । उसपर एक कौआ है, उसने मेरा बहुत नुकसान किया है । उससे बिना बदला लिये दम न लूगा ।"

बढई को जब अहीर के नुकसान की कहानी मालूम हुई तो वह मन-ही-मन बहुत हँसा और टालमटोल करते हुए बोला, "अच्छा, फुरसत मिलने पर काट दूगा ।" मगर अहीर कहा माननेवाला था ! उसे तो बदला लेने की पडी थी । फिर यह डर भी तो था कि कहीं कौआ उडकर चला न जाय !

अहीर ने बढई को बहुत तग किया तो बढई ने साफ-साफ कहा, "भाई, पेड ने मेरा क्या बिगाडा है जो मै उसे काट डालू !"

बढई की बात सुनकर अहीर मन-ही-मन बहुत क्रोधित हुआ ।

वह कौवे की बात तो भूल गया । उसने बढई से बदला लेने की ठानी । बोला, "अच्छी बात है ! मै तुम्हे देख लूगा ।" इतना कहकर वह राजा के पास गया और सारी कहानी सुनाते हुए बढई को बहुत बड़ी सजा देने की विनती की । राजा ने उसकी बात सुनी और गभीरता से सोचकर कहा, "इसमे बढई का तो कोई दोष नही मालूम पडता । अनुचित दण्ड देने से मै भी भगवान के दरबार में पकड़ा जाऊंगा । मुझसे इस तरह का काम नही हो सकेगा ।"

यह सुनते ही अहीर का क्रोध और भडक उठा । कौवा

और वढई को भूलकर अब उसने राजा से बदला लेने का संकल्प किया। वह वहा से सीधा रानी के पास पहुचा। सारा किस्सा रानी को सुनाकर वोला, ' महारानी, आप राजा से रूठ जाइये और वढई को सजा दिलवाकर मानिये।"

अहीर की यहे सब हरकत रानी को पसन्द नही आई। वह वहुत गुस्सा हुई और वोली, "भागो यहा से, नही तो तुम्हारी ऐसी मरम्मत करवाऊगी कि छटी का दूध याद आ जायगा। भला राजा ने मेरा क्या बिगाडा है जो मै उनसे रूठ जाऊं!"

बेचारा अहीर डर के मारे वहा से भागा। अब उसने रानी से बदला लेने की ठानी और आगे बढा।

चलते-चलते रास्ते मे उसे एक साप मिला। उसे देखकर अहीर पहले तो घवडाया, फिर हिम्मत करके उसने साप से विनती की और सारी कहानी कह-सुनाई। अत मे प्रार्थना की, "हे नागदेव, कृपा करके आप रानी के महल मे चले जाइये और रानी को डस लीजिये। उसने मेरा वड़ा अपमान किया है।"

साप को उसकी इस नादानी पर बडा क्रोध आया। उसने अपनी जीभ लपलपाते हुए कहा, "मूरख, जानता नही कि मै विना वात किसीको नही काटता। भला, रानी ने मेरा क्या बिगाडा है कि मै उसे जाकर डस लू! भागो नही तो मै तुझे ही डस लूगा।"

इतना सुनते ही अहीर वहा से नौ दो ग्यारह हो गया। दूर जाकर उसने दम लिया। वोला, "अगर मेरे पास लाठी होती तो उसी दम इस दुष्ट साप से वदला ले लिया होता। अच्छी वात है! साप से वदला लेना कौन वड़ी वात है।" यह सोचकर, साप से वदला लेने की ठान, वह आगे वढा।

थोड़ी-बहुत हैरानी के वाद उसने एक मोटी-सी लाठी का प्रबन्ध किया और उससे कहने लगा, "ओ लाठी, सुना है, अपना भाई भी समय पर काम नही आता, मगर तुम हर समय मदद को तैयार रहती हो। सो तुम उस साप की खबर लो।" लाठी ने उसकी वात सुनकर कहा, "तुम जानते नही कि मै सिर्फ कसूर करनेवालों को ही दंड देती हू। अगर साप ने तुम्हें डस लिया होता तो मै उसे बिना मारे न छोडती।"

इतना सुनना था कि अहीर आग-बबूला हो गया। बोला, "अच्छा, अगर मैंने तुझे जलाकर भस्म नही कर दिया तो मेरा नाम अहीर नही।" अब उसने अपना सारा गुस्सा लाठी पर उतारने का इरादा किया। वह आग के पास पहुचा और उससे विनती करते हुए बोला, "हे अग्नि-देवता, लाठी ने मेरा बडा अपमान किया है। तुम उसे अभी जलाकर राख कर दो।"

अग्निदेवता को जब सारी कथा मालूम हुई तो उस अहीर की नादानी पर दया आ गई। उन्होने समझाना शुरू किया, "जरा-सी दाल के लिए तुम आज कितने दिनो से हैरान हो? इतने दिनो मे तो तुम ढेरो दाल इकट्ठी कर सकते थे। जाओ, अपना काम देखो।"

मूरख को अच्छी बाते भी बुरी मालूम पडती हैं। अग्नि-देवता की बात सुनते ही वह उबल पड़ा। बोला, "चुप रहो, बडे आये हो उपदेश देनेवाले! बोलो, मेरा कहना मानते हो या नही?"

अब अग्निदेवता से न सहा गया। उन्होने अपना प्रचण्ड

रूप धारणकर उसे लपकना ही चाहा कि इतने मे वह किसी तरह वहा से बचकर भाग निकला ।

अहीर का मन बडा अशात था । अब उसने अग्निदेवता से बदला लेने की ठानी और आगे बढा ।

चलते-चलते वह नदी के किनारे पहुचा । उसने सोचा, आग से बदला पानी ही ले सकता है । दूसरा कौन उसके सामने टिक सकता है ! यह सोचकर उसने नदी से प्रार्थना की, "हे नदी, तुम अपनी बाढ से आग को बुझा दो । उसने मेरा बडा अनादर किया है । इसलिए मै अपने सामने उसका घमण्ड चूर-चूर करना चाहता हू ।

नदी बेचारी ने अपनी शात मुद्रा मे कहा, "मुझमे इस समय बाढ नही आ सकती । इसलिए मेरी लाचारी है ।"

इतना सुनकर वह अपना-सा मुह लेकर जगल की ओर रवाना हुआ । वह जगल मे कई दिन तक भटकता रहा । अब उसका सारा गुस्सा नदी पर था । एक दिन सयोग से उसे एक बारहसिघा मिला । उसने सुना था कि बारहसिघा पानी अधिक पी सकता है । उसने उसे सारा हाल कह-सुनाया और बोला, "ओ भैया बारहसिघे, तुम इस नदी का सारा पानी पी जाओ । इसने मेरा कहा नही माना । मुझे बडा हैरान किया है ।"

बारहसिघे ने जवाब दिया, "अगर मै नदी का पानी एक ही दिन मे पी जाऊगा तो फिर दूसरे दिन कहा जाऊगा ? पास मे कोई दूसरी नदी भी नही बहती । अपने पैरो पर मै आप कुल्हाडी नही मार सकता ।"

इतना सुनते ही वह अहीर जल-भुन गया और आखे दिखाते हुए बोला, "अच्छा, इसका बदला लिये बिना मै चैन

नहीं लूगा ।"

उसने सुना था कि बारहसिघे के कान मे जब मच्छर घुस जाता है तो वह मर जाता है। सो अब वह वहां से मच्छर की तलाश मे चला। संयोग से उस समय पास की झाड़ी मे से मच्छर अपनी सुरीली तान छेड रहे थे। अहीर वहा पहुंचा और अपनी बीती उन्हें सुनाई ।

मच्छरो ने अपना-अपना भाग्य सराहते हुए कहा, "ठीक है भाई, पर बात यह है कि हम लोगो को महीनो से खाना नही मिला । देखो, हम लोगों की क्या हालत हो गई है ! आप ऐसा करे कि पहले हमे अपना थोडा-सा खून पी लेने दे, जिससे बदन मे कुछ ताकत आ जाय । फिर हम बारहसिघे के कान मे इस तरह घुस जायगे कि वह हमेशा याद करेगा ।" इतना कहकर उन सब मच्छरो ने अहीर पर वार किया ।

अब तो उसे लेने-के-देने पड गये । वह वहा से छटपटाता हुआ भागा । अब उसने मच्छरों से बदला लेने का निश्चय किया। वह पवनदेव के पास पहुचा। उनसे प्रार्थना की, "हे पवन-देव, मच्छरो ने हमारे साथ बडी दुष्टता की है । आप उनको उडाकर सात समुन्दर पार पहुचा दीजिये। वहा से वे फिर कभी यहा नहीं आने पावेगे । वही ठंडक के मारे मर जायगे ।

यह देखकर कि अहीर बहुत ही क्रोध मे आ गया है, पवनदेव ने पूछा, "ऐसी क्या बात है, जो तुम इतने नाराज हो गये ?"

अहीर ने सब हाल कह-सुनाया । उसकी बात सुनकर पवनदेव जोर-जोर से हँसने लगे ।

वह पवनदेव पर अपना सारा क्रोध प्रकट करते हुए बोला, "अच्छा, तुम्हारा रास्ता मैने न रुकवा डाला तो मेरा नाम बदल देना।"

इसके बाद पवनदेव से बदला लेने का सकल्प कर वह पर्वतराज के दरबार मे पहुचा। पर्वत से कहा, "हे पर्वत महाराज, पवन ने मेरी हँसी उडाई है। आप उसका रास्ता रोक दे। तब देखूगा कि वह मेरे सामने कैसे नाक नही रगडता !"

यह सुनकर पर्वत महाराज बोले, "मै तुम्हारी बात नही मान सकता। पवन मेरा मित्र है। फिर उसके बिना तुम भी नही जी सकोगे। तुम कितने मूरख हो जो ऐसे मित्र से लडाई ठान रहे हो !"

अपनेको मूरख सुनकर अहीर के दिल को बडी गहरी चोट लगी। उसने मन-ही-मन कहा, "बडा आया है यह मुझे मूरख कहनेवाला ! इसका घमड जबतक चूर नही कर दूगा तबतक चैन नही लूगा।"

इसके बाद वह राजा मूषक के दरबार की ओर रवाना हुआ। मूषक चूहो का राजा था। उसके पास हजारो सिपाही थे। अहीर किसी तरह वहातक पहुच गया और उसे सारा हाल कह-सुनाया। बोला, "हे मूषक राजा, आप बहुत बली है। आपकी सेना के डर से बडे-बडे राजा-महाराजा तक थरथर कापते है। आप अपनी सेना से कह दीजिये कि वह पर्वत पर धावा बोलदे, जिससे उसमे हजारो छेद हो जाय और वह खोखला हो जाय। उसने मेरे साथ वडा बुरा व्यवहार किया है।"

राजा मूषक कुछ देर तक अहीर की ओर गभीर मुद्रा से

देखता रहा। फिर बोला, "भाई, क्या करू, आजकल लड़ाई के लिए हमे बिल्कुल फुरसत नही है। राजधानी मे अन्न की कमी हो गई है। क्या खाकर लडे ? देश मे अकाल पड गया है। जब अधिक अन्न उपजने लगेगा तो हमारे खजाने मे भी अन्न खूब भर जायगा। उस समय अगर तुम आओ तो मैं तुम्हारी मदद करने की बात सोच सकता हू।"

राजा मूषक की बात सुनकर अहीर बडी हैरानी मे पडा। अचानक उसे सूझा कि मूषकराज से बदला लेने के लिए उसे बिल्ली की शरण मे जाना चाहिए। पर घूमते-घूमते वह थक गया था। इसलिए उसने सोचा कि पहले घर हो आवे। उसके बाद बिल्ली के पास जायगा।

वह अपने गाव पहुंचा। उसकी स्त्री ने उससे पूरा हाल सुना। पति की मूर्खता पर पहले तो उसे हँसी आई, फिर इतना समय खराब करने की बात सोचकर गुस्सा भी आया। उसने फिर उसे कही भी न जाने दिया। बेचारा अहीर मन मारकर रह गया।

: ८ :

मिथिला का भिखारी

किसी जमाने मे मिथिला के एक गाव मे एक बूढा भिखारी रहता था। वह आस-पास के गावो मे भीख मागता था और अपनी गुजर-बसर करता था।

एक बार मिथिला मे अकाल पडा। वह भिखारी भीख मागते-खाते मझौआ परगने[1] की ओर चला। उसने सुन रक्खा था कि—

"अजब देश मझौआ"
जहा भात न पूछे कौआ।"

वहा पहुचकर वह घूमता-फिरता और दिनभर मे बहुत-सा धान जमा कर लेता।

एक दिन गाव के लोगो ने उससे पूछा, "तुम रोज इतना धान मागकर क्या करते हो?"

भिखारी बोला, "मुझे चार पैला[2] धान मिलता है तो उसमे से एक पैला धान मैं एक राक्षसी को दे देता हू, एक पैला किसीको उधार दे देता हू, एक पैला बहते पानी की धारा मे बहा देता हू और एक पैला से मदिर के देवता को भोग

---

[1] यह परगना चम्पारन जिले मे है। वहा अब भी बहुत अधिक धान होता है।

[2] अनाज तौलने के लिए काठ या कासे का एक पात्र, जिसमे लगभग सेर भर अनाज आता है।

लगाता हू ।"

लोगों की समझ मे उसकी बात नही आई। उन्होने कहा, "बेकार की बात क्यों करता है ? अच्छा बता, कहा है वह राक्षसी ? कहा है वह कर्जदार ? कहां है वह बहते पानी की धारा ? कहा है वह मदिर ?"

भिखारी चुप रहा। गाववालो को जब उत्तर नही मिला तो उन्होंने समझा कि यह भिखारी वडा भारी पाखडी है। वे उसपर बहुत नाराज हुए और उसे पकडकर राजा के पास ले गये। राजा के पूछने पर भी उसने वही जवाब दिया।

राजा की भी समझ मे कुछ न आया। उसने कहा, "तुम्हारे कहने का मतलब क्या है ? साफ-साफ समझाकर कहो।"

भिखारी बोला, "हे राजा, मेरी स्त्री तो वह राक्षसी है। उसे सिर्फ खाना, पहनना और सोना आता है। वह कुछ काम नही करती।"

राजा ने पूछा, "अच्छा, उधार तुम किसको देते हो ?"

भिखारी बोला, "उधार मै अपने वेटे को देता हूं। अभी वह छोटा है। मै अपने हाथ-पैर चलाकर उसे खिलाता हू। जब मेरे हाथ-पैर थक जायंगे और वह जवान हो जायगा तो वह मुझे कमाकर खिलायगा। इसे मै उधार देना कहता हूं।"

राजा ने पूछा, "बहते पानी की धारा मे धान फेकने का क्या मतलव है ?"

भिखारी बोला, "मेरी एक लडकी है। एक पैला धान वह खा जाती है। अभी वह छोटी है। जब सयानी होगी और कमाने-खाने योग्य बनेगी तो अपने पति के घर चली जायगी।

यह सब जानते हुए उसे खिलाने का मतलब बहते पानी मे धान फेकना नही तो और क्या हो सकता है ?"

राजा बड़े ध्यान से भिखारी की बात सुन रहा था। बोला, "अब यह भी बताओ कि किस मदिर मे किस देवता को तुम रोज एक पैला धान का भोग लगाते हो ?"

भिखारी ने कहा, "सरकार, यह अधम शरीर ही वह मदिर है और मेरे प्राण उस मदिर के देवता है। अगर मै रोज इस मदिर और देवता का भोग न लगाऊ तो सारा खेल ही बिगड जायगा।"

राजा भिखारी के जवाब से बहुत खुश हुआ। उसने उससे कहा, "तुम तो बडे भारी पडित मालूम पड़ते हो। फिर भीख क्यो मागते हो ?"

भिखारी बोला, "सरकार, यह सब भगवान की माया है! कोई इसका भेद नही जान पाया है। उसके राज्य मे पडित भिखारी होता है और मूरख धनी। उसके राज्य मे बगुला सफेद रंग का होता है और कोयल काली! उसके राज्य मे पेडो मे छोटे-छोटे फल आते है और बेलो मे बड़े-बडे फल लगते हैं। भगवान की महिमा अपरम्पार है। कहातक बताऊ!"

भिखारी की चतुराई से राजा बहुत खुश हुआ और उसने बहुत-सा दान-दक्षिणा देकर उसे विदा किया।

: ९ :

नाम बड़ा या काम

पुराने जमाने की बात है। किसी गाव मे एक अहीर रहता था। उसका नाम था ठुठपालराय। वह बहुत ही धनी, सुन्दर, आत्मसतोषी और धार्मिक था। वह बहुत ही आनन्द के साथ अपनी जिन्दगी बिता रहा था।

अचानक एक दिन क्या हुआ कि जब ठुठपालराय की स्त्री पनघट पर दूसरी स्त्रियो के साथ पानी भर रही थी, एक स्त्री ने कहा, "चाहे घर मे कितनी ही लक्ष्मी क्यो न हो, पर 'ठूठ' कभी हरा नही हो सकता है।"

दूसरी बोली, "नाम से ही खानदान की पहचान होती है।'

इसपर सब स्त्रिया 'ही-ही' करके हँस पड़ी।

ठुठपालराय की स्त्री समझ गई कि ये बाते उसके पति के नाम को लक्ष्य करके कही जा रही है। तिलमिलाकर वह बोली, "चुप रहो, क्यों बेकार मुझे सता रही हो ?"

तीसरी स्त्री ने यह सुनकर मुह बनाया, बोली, "सच कहती हूं, मेरे 'उनका' ऐसा नाम होता तो मै चुल्लू भर पानी मे डूब मरती।"

ठुठपालराय की स्त्री को बडी चोट लगी। पानी भरा घडा पनघट पर छोडकर वह घर चली गई और उसी घड़ी से उसने अन्नजल त्याग दिया। सात दिन, सात रात, बीत गये, पर वह पति से एक शब्द भी न बोली।

ठुठपालराय ने उसकी यह हालत देखी तो पूछा, "क्या बात है ? तुम्हारी देह क्यों सूखती जा रही है ?"

पत्नी एकदम तेज हो उठी । बोली, "आपको फुरसत हो गई पूछने की ? बात यह है कि मै आपका नाम बदलवाना चाहती हूं । आपका यह 'ठूठ' नाम बडा ही बुरा है । कुए पर औरते ताने मारती रहती हैं । भाड़ मे जाय वह ब्राह्मण, जिसने आपका यह नाम रक्खा !" थर-थर कापती हुई आवाज मे वह बहुत-कुछ बक गई ।

ठुठपालराय को उसकी बात सुनकर बडी हँसी आई । उसने कहा, "जाओ, तुम भी क्या हो ! छोटी-सी बात मे पडकर अपनी कंचन-सी काया को तुमने गला डाला ! अरे, नाम मे ऐसा क्या धरा है ? नाम से काम का महत्व अधिक होता है ।"

स्त्री बोली, "जो हो, मुझे अन्नजल ग्रहण करवाना चाहते हो तो आपको यह नाम बदलवाना ही पडेगा ।"

ठुठपालराय ने गभीर होकर कहा, "क्योजी, मेरा नाम बदलवाकर नकली नाम रखवाओगी ? उससे मेरा क्या बनेगा ? तुम्हे क्या मिलेगा ?"

स्त्री बोली, "तुम्हे कुछ मिले या न मिले, पर मेरा बहुत फायदा होगा । मेरी जान बच जायगी ।"

ठुठपालराय ने कहा, "देखो, जो स्वाभाविक है, वही सत्य है और वही सुन्दर है । 'ठुठपालराय' नाम से मेरा अपना कुछ नही बिगडता, मेरी पगडी नीचे नही झुकती ।"

सुनयना बोली, "लेकिन मेरी तो झुकती है ।"

ठुठपालराय ने फिर समझाते हुए कहा, "नकलीपन से कभी

सुन्दरता नही बढाई जा सकती । आडम्बर से आबरू नही बढती ।"

पर स्त्री पर इस सबका कोई असर न हुआ । वह अपनी बात पर अड़ी रही ।

त्रिया की हठ मशहूर है । हारकर ठुठपालराय अपना नाम बदलने के लिए स्त्री को साथ लेकर सुन्दर नाम की खोज मे चल पडा । चलते-चलते वे दोनो बहुत दूर निकल गये । एक नगर मे पहुचे । नाम की तलाश की । न मिला तो दूसरे नगर मे गये । वहां भी भटके, पर कोई बढिया नाम हाथ नही आया । वह दिन भी बीत गया ।

अगले दिन फिर आगे बढे । देखते क्या है कि "राम नाम सत्त है !" की आवाज लगाते हुए लोग एक मुर्दे को लिये जा रहे है । ठुठपालराय ने आगे बढकर पूछा, "भइया, इस मरे हुए आदमी का नाम क्या था ?"

जवाब मिला, "अमरसिह ।"

सुनकर ठुठपालराय हँस पडा । उसकी स्त्री भी मुस्करा उठी । फिर आगे बढे । चलते-चलते रास्ते मे एक भिखारी मिला । उन्हे देखकर गिडगिडाते हुए बोला, "बाबू, कुछ दे दो ।"

स्त्री को उसे देखकर दया आ गई । उसने कुछ पैसे दिये और पूछा, "क्यो भाई, तुम्हारा क्या नाम है ?"

भिखारी ने उन्हे असीस देते हुए कहा, "मेरा नाम धनपति है ।"

इसके बाद दोनो आगे बढे । एक गांव मे पहुंचे । एक आदमी बड़ी बढिया बछिया लिये आ रहा था । स्त्री ने पूछा,

"भइया, तुम्हारा नाम क्या है ?"

"दयानाथ !" उसने जवाब दिया ।

"तुम्हारी जाति क्या है ?" स्त्री ने फिर पूछा ।

"कसाई ।" वह बोला ।

इसके बाद दोनो पति-पत्नी घर की ओर लौट पड़े। चलते-चलते ठुठपालराय ने स्त्री से कहा, "अमरसिह, धनपति और दयानाथ, तीनो ही नाम कितने सुन्दर है । तुमको तीनो मे से कौन-सा पसन्द आया ?"

स्त्री चुप रही, कुछ बोली नही ।

ठुठपालराय ने कहा, "बोलती क्यो नही ? इसमे सकोच की क्या बात है ? जो नाम तुम्हे पसन्द हो, वही नाम आज से मै रख लूगा ।"

स्त्री बोली—

"अमरसिह तो मर गये,
धनपति मांगें भीख ।
दयानाथ हत्या करें,
तुम ठुठपाल ही ठीक !"

स्त्री की बात सुनकर ठुठपालराय बडा खुश हुआ । बोला, "क्यो, अब फिर नाम बदलने को तो नही कहोगी ?"

स्त्री ने कहा, "नही, तुम ठीक कहते थे, आदमी के नाम का नही, काम का महत्व होता है ।"

: १० :

चार बटोही

किसी समय की वात है। चार वटोही परदेस जा रहे थे। चलते-चलते रास्ते मे उन्हे प्यास लगी। वे एक गाव मे पहुंचे तो उन्हे कुआं दिखाई दिया। उसपर एक स्त्री पानी भर रही थी। उन्होने सोचा कि अगर सब एक साथ जायगे तो शायद वह पानी पिलाने से इन्कार कर दे। इसलिए सबको अलग-अलग जाना चाहिए। यह सोच एक आदमी कुएं पर गया और उसने उस स्त्री से पानी खीचने के लिए डोल मांगा।

स्त्री ने पूछा, "तुम कौन हो ?"

उसने उत्तर दिया, "मै बटोही हूं।"

स्त्री ने कहा, "वटोही तो दो है। एक सूरज, दूसरा चद्रमा। तुम तीसरे कौन से बटोही हो ? सच बोलो, तुम कौन हो ? नही तो यही वैठ जाओ।"

बटोही से कुछ जवाब न बन पडा और वह वही बैठ गया।

इतने मे दूसरा बटोही आया। स्त्री के पूछने पर कि वह कौन है, उसने कहा, "मै क्षमतावान् हूं।"

स्त्री ने कहा, "क्षमतावान् तो दो है। एक धरती माता, दूसरी स्त्री। तुम कौन हो ? इसका सही उत्तर दो, नहीं तो यही बैठ जाओ।"

वह भी उत्तर न दे सका और वही बैठ गया। इसी तरह

एक-एक करके बाकी के दोनो बटोही आये और उनमे से पहले ने अपने को गरीब और दूसरे ने मूरख बताया। स्त्री ने पहले से कहा, "गरीब तो दो होते है। बताओ कौन ?" वह जवाब न दे सका। यही बात दूसरे के साथ हुई।

स्त्री पानी भरकर चारो को साथ लेकर घर की ओर यह सोचकर चली कि वे सब भूखे हैं। उन्हे कुछ खिलाकर पानी पिलाऊ गी। रास्ते मे जब उसके पति ने अपनी स्त्री के पीछे चार आदमियो को आते देखा तो गुस्से के मारे आग-बबूला हो गया। उसने बिना कुछ कहे-सुने चारो को पीटना शुरू किया। उसी समय एक दारोगा उस रास्ते से निकला। मार-पीट होते देख वह उन पाचो को पकडकर थाने मे ले गया और हवालात मे बद कर दिया। जब स्त्री को मालूम हुआ कि उसका पति भी पकड़ा गया है तो वह थाने पहुची और दरोगा से बोली, "आपने इन्हे क्यो पकड़ा ?"

दारोगा ने कहा, "ये लोग आपस मे मारपीट कर रहे थे, इसलिए।"

स्त्री ने कहा, "आपने इन लोगो से मारपीट करने का कारण भी पूछा ?"

दारोगा ने कहा, "नही।"

इसके बाद उस स्त्री ने कुए पर का सारा हाल कह सुनाया। दारोगा ने कहा, "अच्छा, तो तुम्ही उन चारो सवालो का जवाब दो ?"

स्त्री ने कहा, "दो का तो मै दे चुकी हू। आप भी सुन लीजिए। बटोही दो होते है—एक सूरज, दूसरा चद्रमा, जो कभी नही बैठते, सदा चलते ही रहते है। पृथ्वी और नारी

क्षमतावान हैं। वे सबको क्षमा कर देती है। गरीब दो है। एक तो बकरी और दूसरी लड़की। उनके साथ चाहे जैसा वर्ताव किया जा सकता है। मूरख मेरा पति और आप हैं। एक ने बिना कुछ पूछे-ताछे बटोहियों को पीटना शुरू कर दिया, दूसरे ने बिना जाच-पड़ताल किये उन्हे हिरासत मे ले लिया। मै तो इन्हे अपना अतिथि बनाकर लिये जा रही थी।"

दारोगा ने पूछा, "अच्छा, यह बताओ कि अतिथि किसे कहते हैं ?"

स्त्री ने कहा, "जिसके न आने की तिथि हो, न जाने की।"

यह सुनकर दारोगा बहुत खुश हुआ। उसने उन सबको छोड दिया और उस स्त्री से अपनी गलती के लिए माफ़ी मागी।

: ११ :

गुरु-दक्षिणा

एक नाई था। उसके एक भैस थी। वह उसे रोज पोखर पर ले जाकर स्नान करवाता था। एक दिन जब वह उसे मलमल कर नहला रहा था तो उसने देखा कि किनारे पर एक बाबाजी ने तीस अशर्फियां गिनकर बटुए मे रक्खी और उसे अपने जटा-जूट मे छिपाकर बाध लिया।

जल्दी से नाई घर आया और अपनी भैस बाधकर वह बाबाजी के पास पहुंचा। बाबाजी को दडवत करके उसने कहा, "बाबाजी, आज शाम को मुझ गरीब के घर आपके चरण पड़ें तो मैं निहाल हो जाऊ। अबतक न तो मुझे कोई गुरु मिला है, न मेरी घरवाली को। सो मुझे अपना शिष्य बनाकर मेरा यह चोला सफल कर दीजिये। हम दोनो आपका चरणोदक पाकर धन्य हो जायगे।"

बाबाजी बोले, "बच्चा, अगर तू मुझे दक्षिणा मे दो अशर्फिया देने को तैयार हो तो मै तुझे अपना शिष्य बना सकता हू।"

नाई बहुत ही नरमाई से बोला, "बाबा, मुझे मंजूर है। मेरे ऐसे भाग्य कहा कि जो आप जैसे महात्मा की कृपा मुझे मिले! आपके चरण-कमल की दया होगी तो दो अशर्फिया कौन बडी बात है।"

इतना कहकर नाई ने बाबाजी का झोला अपने कंधे पर

डाला और चल दिया। बाबाजी खड़ाऊ की खट-खट करते हुए उसके पीछे चले।

घर पहुचने पर नाई और नाइन ने बड़ी भक्ति से बाबा के पैर थाली मे रखकर धोये। भोजन मे नाना प्रकार की चीजे परोसीं।

भोजन के बाद बाबा चारपाई पर लेटे। नाई उनके पैर दबाने लगा। शिष्य की भक्ति देखकर बाबा बहुत खुश हुए। रातभर गहरी नीद सोये।

सुबह निवटकर जब बाबा चलने लगे तो उन्होने अपनी दक्षिणा मांगी। नाई ने नाइन को सन्दूक की चाबी देते हुए कहा, "सन्दूक मे तीस अशर्फिया रक्खी हुई हैं। जा, उनमें से दो लाकर गुरु-महाराज को दे दे। फिर पैर छूकर आशीर्वाद ले। अगर गुरु महाराज की कृपा हुई तो तेरी गोद सूनी नही रहेगी।"

नाइन चाबी लेकर गई और सन्दूक खोला, पर चारो ओर ढूंढ़ने पर भी अशर्फिया नही मिली। उसने आकर यही बात कह दी।

नाई ने नाइन पर बिगडते हुए कहा, "क्या कहती है तू! अशर्फिया नही है तो कहां गईं। उड़ गईं? मैंने आप एक-एक करके गिनकर रक्खी है।"

नाई खुद गया और थोडी देर बाद सन्दूक मे ढूढ-ढाढकर झल्लाता हुआ आया और नाइन पर बरस पडा—"अशर्फिया सन्दूक मे थी। हमने अपने हाथ से रक्खी थी। यह सब तेरी करतूत है। तूने ही उन्हे कही छिपाकर रखा है। मौका मिलने पर अपने भाई-बाप को दे देगी। तेरी खानातलाशी ली जायगी।"

इतना कहकर उसने नाइन की तलाशी ले डाली, लेकिन अशर्फिया नही मिली।

तब नाई ने नाइन से कहा, "तू समझती होगी कि मैंने उन्हें कही रख लिया है। अच्छा, तू मेरी तलाशी ले ले।"

नाइन ने नाई की तलाशी ली, पर अशर्फिया नही निकली।

तब नाई ने बाबाजी से कहा,"महाराज, मेरी यह नाइन बडे शक्की मिजाज की है। इसलिए आप भी अपनी खाना-तलाशी दे दीजिए, जिससे इसका शक मिट जाय।"

बाबाजी तुरन्त खडे हो गये और बोले, "अरे, इसमे कौन-सी बात है! जरूर मेरी भी तलाशी ले लो।" कहते-कहते बाबाजी ने अपनी लगोटी और कोपीन हिलाकर दिखा दी।

नाई ने कहा, "महाराज, जटाजूट रह गए। उन्हे भी दिखा दीजिए। यह नाइन बडे खोटे दिल की है।"

बाबाजी पहले तो हिचकिचाये, पर कर क्या सकते थे! लाचार होकर उन्हे जटाजूट खोलने पड़े। खोलते ही बटुआ सहित अशर्फिया निकल आई।

नाई बोला, "देखा, महाराज मे कितना सत्त है, खोई हुई अशर्फिया उन्होने वापस बुलादी। वाह महाराज वाह! (स्त्री से) अच्छा, ले गिन ले, पूरी न निकले तो मुझसे कहना! उनमे से दो महाराज के चरणो मे चढ़ा दे और आशीर्वाद माग कि तेरी सूनी गोद भर जाय।"

नाइन ने एक-एक करके अशर्फिया गिनी तो सचमुच तीस निकली। उसने दो महाराज के चरणो मे रख दी।

नाई ने हाथ जोड़ते हुए कहा, "महाराज, आपने मेरी जान बचाली। अब कभी इधर पधारे तो सेवक को न भूलिए।"

अपना हारा और स्त्री का मारा आदमी कुछ नही बोलता, सो साधु बाबा चुप रहे। फिर जाते-जाते बोले, "बच्चा, खुश रहो। आदमियो मे नौआ से और पंछियो मे कौआ से सदा होशियार रहना चाहिए।"

: १२ :

सबसे बड़ा मूरख

चार मित्र कही जा रहे थे। चलते-चलते थक गये तो अपनी थकान मिटाने के लिए एक पीपल के पेड़ की छाया मे वैठ गये। चारो दोस्त चार जाति के थे—एक ब्राह्मण, दूसरा क्षत्रिय, तीसरा वैश्य और चौथा कायस्थ।

बाद मे एक और आदमी पेड की छाया मे सुस्ताने आया। चारो दोस्तो को देखकर उसने झुककर सलाम किया।

उसके सलाम से चारो दोस्तो मे खटपट शुरू हो गई। मुशीजी (कायस्थ) बोले, "इसने मुझे सलाम किया है।"

पडितजी बोले, "नही, मुझे किया है।"

सिहजी बोले, "जी नही, मुझे किया है।"

साहजी भला क्यो चुप रहते! वह बोले, "अरे भाई, अगर सच मानो तो उसने इकट्ठे सबको सलाम किया है। नही विश्वास होता है तो पूछ लो उससे। हाथ कगन को आरसी क्या!"

सिहजी तपाक से बोले, "चल हट, बडा आया अपने को सलाम करवाने! हम राजपूत हैं। सलामी लेने का खानदानी अधिकार मेरा है, न कि तेरा।"

इस तरह बात बढ गई और जब आपस का झगड़ा आपस मे नही निबट सका तो सबने उस आदमी से पूछा, "क्योजी, "तुमने हम लोगो मे से किसको सलाम किया है?"

वह समझ गया कि हो-न-हो, ये चारों मूरख हैं। जो जैसा हो, उसके साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए। वह बोला, "तुम लोगो मे जो सबसे बड़ा मूरख होगा, उसीको सलाम किया है। सब अपना-अपना प्रमाण दो। फिर क्या था! उसकी बात सुनते ही सब अपनी-अपनी मूर्खता की बात सुनाने के लिए उतावले हो उठे।

पंडितजी ने अपनी पगड़ी ठीक की, बोले—पहले मेरी सुनो। भादो की अंधियारी रात थी। पंडिताइन अपने बाल-बच्चो को लेकर नैहर चली गई थी। मै अकेला था। आधीरात को सेंध लगाकर चोर घर मे घुस आया। आहट पाकर मैं जाग गया। हल्ला करने ही वाला था कि याद आया, जरा पत्रा मे मुहूर्त देखलू तो अच्छा रहेगा। सो पत्रा निकालकर देखा तो मुहूर्त्त पूरनमासी की रात का निकला। उस समय बहुत ही अशुभ घडी थी। इसलिए हाथ मलकर चुप रह गया।

पूरनमासी की रात आई। आसमान साफ था। चाद हँस रहा था। १ बज कर १४ पल भर हल्ला करने का मुहूर्त्त था। सो ठीक समय पर बाहर निकलकर मैने हल्ला करना शुरू किया—चोर...चोर

शोर सुनकर पास-पड़ोस के लोग दौडे आये। सयोग से उसी समय एक आदमी शहर मे कमाई करके घर लौट रहा था। लोगो की मदद से उसीको पकडकर हवालात मे बन्द कर दिया गया। उस बेचारे ने अपनी लाख सफाई दी, पर किसीने न सुनी।

सबेरे राजा के दरबार मे हम सबको ले जाया गया। राजा ने सब हाल सुनकर पूछा, "क्या यही चोर है? मैंने

समर्थन किया कि "जी हां, यही चोर है।"

राजा ने पूछा, "चोरी कब हुई ?"

मैने कहा, "चोरी तो आज से कोई आठ-नौ दिन पहले हुई थी। मेरा सारा सामान चला गया।"

राजा ने पूछा, "तो आज इतने दिन बाद पूरनमासी की रात को हल्ला क्यो किया ?"

मैने कहा, "महाराज, पत्रे मे हल्ला मचाने का मुहूर्त्त पूरनमासी की रात का ही निकला था।"

यह सुनकर राजा को बडा गुस्सा आया। बोला, "निकलजा मूरख यहा से !"

सो राजा साहब से मुझे यह प्रमाण-पत्र मिला है। भरोसा न हो तो चलकर राजा से पूछलो कि मै सबसे बड़ा मूरख हू कि नही।

अब साहजी की बारी आई। बोले—अरे भाई, हमसे ज्यादा मूरख तुम क्या होगे ? दिवाली की रात की बात है। लक्ष्मीपूजा करके सारी जमा-पूंजी थाली मे रखकर मै अपनी स्त्री के साथ बैठा था। विचार आया कि आज साल भर का पर्व है। दिवाली की रात को हार-जीत जरूर करनी चाहिए। इसीसे पता चल जायगा कि सालभर घाटे मे रहूंगा या मुनाफे मे। स्त्री से मैने यह बात कही तो वह बोली, "इतनी रात गये अब कहा जाओगे ? मेरे साथ ही हार-जीत कर देखो।"

इसके बाद हम दोनो ने हाथ-से-हाथ मिलाकर बाजी लगाई कि जो पहले बोले सो हारे। बात पक्की हुई और चुपचाप जाकर गुदगुदे पलग पर लेट गये।

आधी रात बीती कि घर मे चोर घुस आया। हम दोनो

जाग रहे थे। पर बोले कौन ? जो बोले सो हारे। कोई नही बोला और चोर घर का सारा सामान लेकर चला गया।

चोर लालची था। थोडी देर वाद फिर लौटा। तब भी हम दोनो जाग रहे थे। किन्तु बोले कौन ? इस बार चोर के लिए कुछ भी न बचा था। उसने मेरे कपडे समेटे। फिर भी मै नही बोला। आगे बढकर उसने मेरी स्त्री की गर्दन पर हाथ लगाया और हसुली खीचने लगा। तब भी मै चुप रहा। लेकिन स्त्री से न रहा गया। वह चिल्लाई—"अब तो बोलो और हल्ला करो, नहीं तो मेरी इज्जत ही लुटी जा रही है।"

मैने कहा, "तुम हार गई। बोलो, है न मजूर ?"

स्त्री बोली, "हार-जीत जाय भाड़-चूल्हे मे। मेरा तो घर लुट गया और इज्जत-आबरू पर आ बनी।"

अब हम दोनो इसी बात पर झगड़ने लगे। हल्ला-गुल्ला सुनकर अड़ोस-पड़ोस के लोग आगये। कारण जानने पर सब छी:-छी: करने लगे और बोले, "तुम अव्वल दर्जे के मूरख हो। घर लुट गया और तुम दोनों देखते रहे !"

अब बताओ, तुम बडे या मै ?

इतना सुनकर सिहजी बोले, "अच्छी कही तुम लोगो ने। अरे, तुम दोनों से तो मै कही बढ-चढ़कर हू। लो सुनो। एक दिन की बात है। मै अपने दालान मे बैठा हुक्का पी रहा था। उधर से एक काबुली कुछ कम्बल लिये हैदल बछेड़ी पर चढकर चला जा रहा था। घोडी मुझे जच गई। मैने रोककर पूछा, "घोड़ी बेचोगे ?"

काबुली बोला, "बेचूंगा, पर तुम उसका दाम नही दे सकते। कोई राजा ही यह घोड़ी खरीद सकता है।"

मैने कहा, "कीमत बताओ।"

काबुली ने हजार रुपये बताये। मैने कहा, "ठीक है।" घोडी को खूटे से बधवाया। सन्दूक मे पाचसौ रुपये थे, सो गिन दिये। बाकी के रुपये के लिए कहा कि तुम कम्बल बेचो। जाते समय लेते जाना।"

काबुली चला गया।

दो दिन के बाद वह कम्बल बेचकर लौटा। मैने गाव के साहूकारो से एक आना महीने ब्याज पर चार सौ रुपये उधार लिये और उसे दे दिये। बाकी के सौ के लिए काबुली से एक हफ्ते की मोहलत मागी। काबुली ने अपनी दोनों आखे बन्द करली और एक क्षण के बाद उन्हे खोलकर बोला, "सिहजी, एक हफ्ता हो गया। लाओ रुपये।" बहुत कोशिश करने पर भी रुपये न चुका सका तो करार के मुताबिक सौ रुपये मे वही घोडी फिर काबुली के हाथ बेचकर उसके पूरे रुपये चुका दिये।

अब बोलो, मै बडा मूरख या तुम लोग ?

इसके बाद मुशीजी ने मुह खोला, बोले—तुम सब तो अपनी-अपनी कह चुके। मुझे अपनी कहने मे थोड़ा सकोच मालूम होता है और मै स्वय यह तय नही कर पा सका हू कि मैने जो काम किया है, वह सही था या मूर्खता-पूर्ण। वरसात का मौसम था। नदी-नाले भरे हुए थे। अचानक ससुराल से खबर आई कि सास बहुत बीमार है। बचने की कोई उम्मीद नही है। मुह देखना हो तो फौरन चले आओ। सो मै अपनी घरवाली और बाल-बच्चो को लेकर ससुराल के लिए रवाना हुआ। रास्ते मे नदी पडी। स्त्री बोली, "घाट देख

लो । वहां नाव मिल जायगी ।"

मैने कहा, 'क्या नासमझी की बाते करती हो ! नाव-वाले को खोजो, उसकी खुशामद करो, तब पार उतरो । उस-की जरूरत क्या है ? मै पैमाइश करना जानता हूं । लो, अभी बतला देता हू कि नदी मे कितना पानी है । अगर ज्यादा पानी न हुआ तो हम लोग बिना नाव के पार उतर जायगे ।"

मै नदी मे उतरा । पैर डूबे, फिर घुटने तक पानी आया, फिर जाघ तक, आगे कमर तक और उससे आगे छाती तक । हिसाब जोडकर औसत निकाला तो घुटने भर से थोडा ऊपर पानी का औसत बैठा ।

अपनी स्त्री से मैने कहा, "कोई बात नही है । पानी ज्यादा नही है । घुटने से थोडा ऊपर है । हम लोग मजे मे पार उतर जायगे । बच्चो को भी दिक्कत नही होगी ।"

स्त्री की समझ में मेरा हिसाब नही आया । मुझे गुस्सा आ गया । मेरे हिसाब और गिनती का औसत कचहरी तक मे माना जाता है । कभी कोई काट नही सका । यह चूल्हा फूकने-वाली औरत मुझे गलत ठहरा रही है ! जोर-से डपटकर मैंने सबको आने के लिए कहा । आगे-आगे आप चल दिया । बीच धारा मे पहुचते-पहुचते बच्चे डूबने लगे । मेरी स्त्री उन्हे बचाने मे खुद बह गई । मै बेफिकर था । मेरा हिसाब गलत नही हो सकता था । पर जब मैंने देखा कि वे सब गायब हैं तो मेरी समझ मे नही आया कि वे कैसे बह गये । मैने पानी को फिर से नापकर देखा तो औसत पहले जितना ही आया । मेरे सामने आज भी समस्या है कि—

लेखा-जोखा ज्यों-का-त्यों ।
लड़का-लड़की डूबे क्यों ?

सबकी बाते सुनकर वह आदमी मुस्कराता हुआ बोला, "सबसे बडे मूरख मुशीजी है। तुम तीनो ने तो धन ही खोया, इन्होने तो बाल-बच्चो को ही डुबो दिया ! ऐसे आदमी को कौन हाथ नही जोडेगा !"

: १३ :

चिड़ियारानी

एक राजा था। उसके राज्य मे प्रजा को हर तरह का आराम था। वह सुख से अपना जीवन व्यतीत करती थी। उसे किसी बात का कष्ट न था। लेकिन राजा के कोई सन्तान न थी। इससे राजा और प्रजा सभी दुःखी रहते थे। सन्तान न होने के कारण लोग सोचा करते थे कि राजा के बाद गद्दी पर कौन बैठेगा ? इसलिए सब भगवान से प्रार्थना किया करते थे कि राजा के अधिक नही तो कम-से-कम एक कन्या तो हो ही जाय।

एक दिन रानी अपने महल मे बैठी सोच रही थी कि सतान कैसे हो, अचानक उसके मन मे विचार उठा कि एक सुन्दर चिडिया अपने पास पिंजड़े मे रख लू और किसी दिन दासियों से राजा को कहलवा दू कि मेरे बच्चा होनेवाला है। आगे जो होगा सो देखा जायगा। कुछ दिन के लिए तो राजा और प्रजा सुखी हो ही जायगे।

यह सोच रानी ने दासियो को बुलाकर कहा कि मेरे लिए कही से एक सुन्दर चिडिया ले आओ। मै उसे अपने पास छिपाकर रक्खूगी। राजा से मत कहना।

रानी के आज्ञा देते ही पिंजडे मे बन्द एक सुन्दर चिड़िया उसके पास आ गई। इसके बाद मौका पाकर रानी ने एक दिन राजा से कहलवा दिया कि रानी गर्भवती है। यह सुनकर

राजा बहुत ही खुश हुए । बात-की-बात मे यह समाचार सारे नगर मे फैल गया । प्रजा की खुशी का ठिकाना न रहा ।

छः महीने के बाद बडी धूमधाम से रानी की गोद भरी गई । जब नौवा महीना पूरा हुआ तो दासियो ने राजा को खबर दी कि रानी के एक सुन्दर राजकुमारी पैदा हुई है । सारे राज्य मे खुशिया मनाई गईं ।

एक दिन राजा रानी से मिलने आये । बोले, "रानी, राजकुमारी को मुझे दिखा दो ।"

रानी ने कहा, "महाराज, धीरज रखिये । मै अभी राजकुमारी को नही दिखाऊगी । जब दष्टौन हो जायगा तब दिखा दूगी ।"

दष्टौन हो गया तो राजा ने फिर इच्छा की, पर रानी बोली, "अभी नही । मुडन के समय दिखाऊंगी ।"

कुछ दिनो के बाद मुडन भी हो गया । राजा ने फिर कहा तो रानी बोली, "अभी नही । जब राजकुमारी का कनछेदन होगा, तब देख लीजियेगा ।"

कुछ दिनो के बाद कनछेदन भी हो गया । राजा ने बडी उतावली से कहा, "रानी, अब तो राजकुमारी को मुझे दिखा दो ।"

रानी ने जवाब दिया, "जब राजकुमारी की सगाई होगी, तब देख लीजियेगा ।"

दिन जाते देर नही लगती । धीरे-धीरे पन्द्रह बरस बीत गये । एक दिन रानी ने राजा से कहा, "महाराज, अब राजकुमारी शादी के योग्य हो गई है । उसके लिए योग्य वर की तलाश करवाइये और शादी कर दीजिये ।"

राजा बोले, "अच्छा।"

रानी की इच्छानुसार राजा पगडी बाधकर दूर-दूर के देशो मे जाकर अच्छे राजकुमार की तलाश करने लगे। पर कही योग्य वर न मिला। निराश होकर लौट आये।

दुर्भाग्य से वर की खोज मे राजा की टाग टूट गई। बडी मुश्किल से वह ठीक हुई। उसके बाद राजा ने फिर वर की खोज शुरू की। बहुत हैरान होने पर एक नगर मे राजा की पसद का राजकुमार मिल गया। वह राजकुमारी की सगाई करके वापस लौट आये। महल मे आकर राजा ने रानी से कहा, "रानी, अब तो राजकुमारी की सगाई पक्की हो गई। उसे मुझे दिखादो।"

रानी ने कहा, "अभी नही। जब इतने दिनो तक आपने सब्र किया है तो थोडा और ठहर जाइये। जब बेटी की भावर पडेगी तब देख लीजियेगा।"

शुभ लग्न देखकर ब्याह की तिथि तय की गई। समय पर बरात आई। बडी अच्छी तरह से विधिया हुईं। किन्तु जब भावर पडने का समय आया तब लडकेवालो ने कहा, "दुलहिन को बुलाओ।" रानी को खबर की गई तो उन्होने कहलवा भेजा कि हमारे यहा राजकुमारियो की भांवर डोली से पड़ती है।"

उसी तरह भावरे पड गई।

भावरे पड़ जाने पर राजा ने कहा, "रानी, अब तो राजकुमारी को दिखा दो।"

रानी बोली, "अभी नही, जब आप उसे लिवाने जाइयेगा तो देख लीजियेगा।"

इस तरह चिडिया का व्याह बडी धूम-धाम से हो गया। जब बरात बिदा होने का समय आया तो एक डोली मे चिडिया का पिजडा रख दिया गया और दूसरी मे राजकुमार को बैठा दिया गया। जब वे लोग नगर से वाहर आ गये तो राजकुमार अपनी डोली से उतरकर राजकुमारी की डोली मे गये। वहा वह देखते क्या हैं कि चिडिया का पिजडा रक्खा है। राजकुमार को बडी हैरानी हुई, पर वह कर क्या सकता था!

बरात घर पहुची। राजकुमार की माता ने परछन करना चाहा तो राजकुमार ने रोक दिया। कहा, "मा, अभी परछन नही होगा, जब छोटे भाई की शादी होगी तब हम दोनो भाइयो का परछन एक साथ हो जायगा।"

राजकुमार ने पिंजडे को लेकर अपने महल मे टाग दिया और चिड़िया को नियमित दाना-पानी देने लगा।

• •

कुछ दिन बाद छोटे राजकुमार का व्याह निश्चित हो गया। शादी के थोडे दिन रह गये। मा ने राजकुमार से कहा, "वेटा, जब से तुम्हारी शादी हुई है, तबसे दुलहिन को हवेली के अन्दर ही बैठाये रखते हो। घर का काम-काज कैसे चलेगा? अनाज साफ होना है, दाल तैयार होनी है। अकेली मै क्या-क्या कर लूगी।"

यह सुनकर राजकुमार अपने कमरे मे चला आया और माथे पर हाथ रखकर बैठ गया। चिडिया अबतक चुप रहती थी। राजकुमार को इस प्रकार चिन्तित देखकर उससे न रहा गया। बोली, "क्यो, क्या बात है? आप उदास क्यो है?"

चिड़िया को बोलते देखकर राजकुमार को बडा अचरज हुआ। उसने कहा, "क्या कहूं ! घर मे शादी है। मा कहती है कि तुम्हारी बहू दाल दलने, कूटने-पीसने के किसी काम मे हाथ नही बंटाती।"

यह सुनकर चिडिया हँसकर बोली, "बस इतनी-सी बात के लिए आप चिंतित हैं। आप जाकर मा से कह दीजिये कि अनाज-दाल जो भी ठीक कराना हो, आगन मे रखवा दे। सब ठीक हो जायगा।"

यह सुनकर राजकुमार हँसी-खुशी मा के पास गया। मा ने कहा, "बेटा, धान कूटना है। बताओ, कौन कूटे ?"

राजकुमार बोला, "मा, जितना धान कुटवाना हो आगन में रखवा दो। रातभर मे सब कुटकर तैयार हो जायगा।"

मा ने कहा, "अच्छा।"

रात को रानी ने पांच मन धान राजकुमार के आंगन मे डलवा दिया और सोने चली गई। राजकुमार चिडिया के पास गया और उससे बोला, "पांच मन धान मा ने कुटवाने के लिए आगन मे रखवा दिया है।"

इतना सुनते ही चिड़िया फुर्र से पिंजड़े से उडी और थोड़ी देर मे बहुत-सी चिडियो को इकट्ठा कर लाई। देखते-देखते सारी चिड़ियो ने धान को अपनी चोच से साफ करके चावल एक तरफ और भूसी दूसरी तरफ निकालकर रख दी। काम निबट जाने पर वे एक-एक करके उड गई और राजकुमार की चिड़िया पिंजड़े मे आकर बैठ गई।

जब राजकुमार की मा सबेरे उठी और उन्होंने कुटे चावलों का ढेर देखा तो उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। बोली,

"वाह, कितने अच्छे चावल कुटे हैं ! भूसी एकदम साफ । एक दाना तक नही टूटा ।"

वह मन-ही-मन सोचने लगी कि राजकुमार की बहू कितना अच्छा काम करती है । वह जरूर बहुत सुन्दर होगी । यही वजह है कि राजकुमार उसे किसीको देखने नही देता । कही नज़र न लग जाय ।"

अगले दिन रानी ने राजकुमार से कहा, "आज दाल दलनी है ।"

यह सुनकर राजकुमार पहले की तरह सोच मे पडकर अपने कमरे मे सुस्त होकर बैठ गया । उसे चिन्तित देखकर चिडिया ने पूछा, "क्यों, क्या बात है ?"

राजकुमार बोला, "आज मा ने दाल दलने के लिए कहा है ।"

चिडिया ने कहा, "बस, इतनी-सी बात के लिए आप चिन्ता मे पड गये । जाकर माताजी से कहिये कि जितनी दाल दलवानी हो, भिजवा दे ।"

राजकुमार ने यही बात जाकर रानी से कह दी । रानी ने शाम को उडद आगन मे रखवा दिये और दाल दलने की सभी चीजे, चक्की, सूप आदि अपने पास रखकर वह सो गई । उन्होने सोचा कि जब बहू उन चीजो को उठाने आवेगी तब मैं उसे चुपके से देख लूगी ।

पहले की तरह रात को चिड़िया अपने पिंजडे से निकली और ज़रा-सी देर मे चिडियो की पलटन इकट्ठी कर ली । चिडियो ने मिलकर अपनी चोंच से उडद के छिलके अलग करके दाल एक तरफ और छिलके दूसरी तरफ कर दिये ।

इस प्रकार दाल तैयार करके सारी चिडिया उड़ गईं। राजकुमार की चिडिया अपने पिजडे मे आ गई।

अगले दिन रानी ने दाल दली हुई देखी तो विस्मय मे रह गई। सारा सामान ज्यो-का-त्यो रक्खा रहा और काम पूरा हो गया। राजकुमार की बरात जाने के दिन पास आये तो बडे राजकुमार को बडी चिन्ता हुई। वह अपने कमरे मे उदास होकर बैठ गया। चिडिया ने उसे हैरान देखा तो बोली, "क्यो, आप चिन्तित क्यो है ? जो बात हो; मुझसे कहिये। मै उसे पूरा करने की कोशिश करूंगी।"

राजकुमार ने कहा, "मुझे बरात मे जाना पडेगा। चार दिन लगेगे। इस बीच तुमको चारा-दाना कौन देगा ?"

चिडिया बोली, "इसमे परेशान होने की क्या बात है ! मेरे पिंजडे मे थोडा दाना और एक डब्बा पानी रख दीजिये। मै उतने मे ही दिन काट लूगी।"

राजकुमार ने ऐसा ही किया और बरात मे चला गया।

सयोग की बात कि एक दिन चिड़िया पानी पीने के लिए पानी के डब्बे पर बैठी कि डब्बा उलट गया और सारा पानी गिर गया। अब वह प्यास के मारे फडफड़ाने लगी। गला सूख गया। प्राण सकट मे पड गये। चिडिया को एक तरकीब सूझी। उसने डब्बे मे डोरी बाधकर उसे अपने गले मे लटका लिया और पिंजडे के छेद से निकलकर कुए पर पहुंची। जब वह पानी पीने के लिए अदर गई तो बडी कठिनाई आई। वह पानी मे डुबकी लगाती थी तो उसका डब्बा पानी पर उत-राता था और जब डब्बा डूबता था तो वह उतराती थी। इस तरह उसने कई बार पानी पीने और डब्बे मे भरने का प्रयत्न

किया, पर उसे सफलता नही मिली।

रात बीतने को आई, पर चिडिया प्यासी-की-प्यासी रही। भाग्य से सवेरा होने से पहले शिव-पार्वती उस रास्ते से गुजरे। चिडिया की हैरानी देखकर पार्वती को बडी दया आई। उन्होने शिवजी से कहा, "हाय, देखो तो इस चिडिया को कितना कष्ट हो रहा है। इस बेचारी का उद्धार कर दीजिये।"

पार्वती की बात सुनकर शिवजी बोले, "हमे स्त्रियो की यही सब बाते अच्छी नही लगती। यह संसार है, यहा नाना तरह से लोग दु:ख-सुख भोगते हैं। जिसके भाग मे जितना लिखा है, वह उतना पाता है।"

पार्वती बोली, "चाहे जो हो, लेकिन इस चिडिया का तो उद्धार आपको करना ही होगा।"

पार्वती की हठ देखकर शिवजी ने तुरत अपने बायें हाथ की छोटी अगुली चीरकर चिडिया की देह पर लहू छिडक दिया। लहू की बूद गिरनी थी कि वह रूपवती कन्या बन गई।

उसने शिवजी से प्रार्थना की, "जब आपने मुझपर इतनी कृपा की है तो मुझे मेरे घर तक पहुचा दीजिये।"

कन्या की विनती सुनकर शिव-पार्वती उसे उसके घर पर पहुचाकर अन्तर्धान हो गये।

बरात लौटी। राजकुमार बडी उतावली से अपने कमरे मे गया तो देखता क्या है कि चिडिया की जगह एक सुन्दर राजकुमारी खडी है। राजकुमार को बडा क्रोध आया और वह अपनी तलवार निकालकर उसे मारने दौडा।

राजकुमारी ने हाथ जोड़कर कहा, "अभी मुझे मत मारिये।

जो हुआ है वह सुन लीजिये। फिर आपकी जैसी मरजी हो, वैसा कीजिये।"

इसके वाद चिड़िया ने सब हाल कह-सुनाया।

सुनते ही राजकुमार बहुत प्रसन्न हुआ और राजकुमारी को छाती से लगा लिया। फिर क्या था! वह उसे लेकर रानी के पास गया। राजकुमारी चलती थी तो चन्दन के पैर के निशान धरती पर पडते थे और जब हँसती थी तो मोती झडते थे।

यह सब देखकर रानी ने राजकुमार से कहा, "अब समझी कि तुम बहू को क्यों नही दिखाते थे।"

कुछ दिनों के वाद राजकुमारी के पिता उसे बिदा कराने आये। जब उन्होने राजकुमारी को देखा तो फूले न समाये। बड़ी हँसी-खुशी के साथ वह उसे विदा कराकर ले गये।

जब रानी ने अपनी बेटी को देखा और सारा हाल सुना तो उनकी भी खुशी का ठिकाना न रहा।

उस दिन से सब अच्छी तरह रहने लगे।

: १४ :

बहू की करामात

किसी गाव मे एक ब्राह्मण रहता था। वह बडा गरीब था। उसके दो बेटिया थी। सयोग से बड़ी बेटी का ब्याह पैसेवाले के यहा हुआ था और छोटी गरीब घर मे ब्याही थी। जब छोटी बेटी ससुराल जाने लगी तो उसकी मा सोचने लगी कि कोई ऐसा उपाय होना चाहिए, जिससे वह वहा कुछ दिन तो सुख से बिता सके। फिर उसके भाग्य मे जो बदा है, वह तो होगा ही। मा के पास सोने का एक करनफूल था, जिसे वह बहुत दिनो से छिपाकर रक्खे हुए थी। मा ने सोच-विचार-कर वह करनफूल निकाला और विदाई के समय जब बेटी का जूडा बाधा गया तो मा ने चुपचाप वह करनफूल उसमे लगा दिया। जूडा बधने पर बेटी का हाथ सहसा करनफूल पर जा पड़ा। बेटी ने अचरज से कहा, "मा, यह क्या?"

प्यार से मा बोली "बेटी, तेरी मा के पास यही है। ससु-राल जाकर तू इसको बेच डालना और कुछ दिनो तक अच्छे खाने-पीने की व्यवस्था कर लेना।"

"जब वह पैसा खत्म हो जायगा तब क्या होगा?" बेटी ने तपाक से पूछा!

मा ने धीमे स्वर मे कहा, "फिर जो भाग्य मे लिखा होगा, वह भोगना।"

बेटी ने जूडे मे से करनफूल निकालकर मा को देते हुए कहा, "तो अभी से भाग्य का सामना क्यो न करू, मां?

भगवान न करे कि ऐसा हो; लेकिन अगर तुमपर मुसीबत आ पड़ी तो क्या करोगी ? मै यह करनफूल नही लूगी।"

इसके बाद लड़की अपनी ससुराल चली गई। उसके पति चार भाई थे। सबके अलग-अलग चूल्हे थे। लड़की ने ससुराल पहुंचते ही अपने पति से कहा, "एक ही घर मे चार चूल्हे जलते है, अलग-अलग हाडी मे नमक डाले जाते है। अगर सब मिलकर रहे तो बहुत-सा खर्च बच जायगा।"

पति ने भाइयो से बात की तो उन्हे बहू की सलाह बडी अच्छी लगी। सब एक परिवार मे मिल-जुलकर रहने लगे। लेकिन गरीबी के पैर उस घर में ऐसे जमे थे कि खर्च मे कमी हो जाने पर भी कठिनाई कम न हुई। तब बहू ने सबके सामने एक और बात रक्खी। उसने कहा, "सारे गांववालों से कहो कि वे अपने-अपने घरो का एक दिन का सारा कूडा-करकट झाड़-बुहारकर हमारे दरवाजे के पास ढेर लगा दे।"

"यह तो कोई बडी बात नही। कूड़ा डालने मे क्या लगता है। पर उससे होगा क्या ?" उन्होने पूछा।

"आप लोग ऐसा करावे तो सही।" बहू ने आग्रह किया।

"अच्छी बात है।" भाइयों ने कहा। सारे गांव मे घूम-घूमकर उन्होने लोगो से प्रार्थना की और एक दिन का कूडा अपने घर के सामने डाल देने पर उन्हें राजी कर लिया। निश्चित दिन उनके दरवाजे के सामने कूडे का ढेर लग गया। किसीके घर उस दिन काला साप निकला था। उसने साप को मारकर भी कूडे के साथ डाल दिया।

उसी गाव मे एक साहूकार रहता था। उसकी स्त्री को गहनो का बडा शौक था। गहनो मे उसे सबसे ज्यादा चन्द्रहार प्यारा

था। नहाते समय वह उसे उतारकर गुसलखाने की ताक मे रख दिया करती थी। एक दिन वह उसे वही रक्खा भूल गई। अकस्मात एक चील उडकर वहा आई और उसे मास का टुकडा समझकर उडा ले गई। उडते-उडते ब्राह्मण-भाइयो के दरवाजे के सामने कूडे के ढेर पर पडे साप पर उसकी निगाह गई। वह साप को पकडने के लिए ढेर पर उतरी और हार को वही छोड़ साप को ले गई।

दिन चढने पर चारो भाइयो ने उस कूडे के ढेर पर चन्द्र-हार पडा देखा। मारे खुशी के वे उछलने लगे। मन-ही-मन बोले, "भगवान देते है तो छप्पर फाडकर देते हैं।"

इसके बाद उन्होने वह हार ले जाकर बहू को दिखलाया। मगर वहू उसे देखकर गभीर होगई। बोली, "यह हार किसी दूसरे का है। कूडे के साथ भूल से चला आया है। इसे जतन से रखना चाहिए और पता लगाकर जिसका हो उसे दे देना चाहिए। हमारे लिए तो यह कूडे के समान है।"

इतना कहकर उसने हार को सभालकर रख लिया।

उधर साहूकार की स्त्री को जब हार की याद आई तो उसने गुसलखाने मे जाकर देखा। पर वह वहा होता तो मिलता। घर का कोना-कोना छान डाला, पर हार न मिला।

फौरन गाव मे ढिंढोरा पिटवाया गया कि जो हार खोज-कर साहूकार को देगा, उसे मुहमागा इनाम मिलेगा।

बहू ने जब ढिंढोरे की बात सुनी, पीतल की थाली मे हार को सजाकर वह साहूकार के पास गई। साहूकार हार पाकर बहुत खुश हुआ। उसने पूछा, "बोलो, क्या इनाम चाहिए ?"

बहू ने कहा, "वचन दीजिये तो बताऊ।"

साहूकार ने तीन वार वचन हारते हुए कहा—"एक सत्, दोसर सत्, तीसर सत्, हारू तो ब्रह्मा-विष्णु के नरक मे जाऊ।"

बहू बोली, "अच्छा, दिवाली की रात को मेरे घर के सिवाय और किसीके घर दीये न जलाये जायं।"

साहूकार तीन वार वचन हार चुका था। उसे बड़ा बुरा लगा, पर बात निभानी पड़ी। उसने गावभर मे ढोल पिटवा दिया कि दिवाली के दिन कोई भी अपने घर दीया न जलावे।

दिवाली आई। ब्राह्मण-भाईयो के घर को छोडकर कहीं दीया न जला। लक्ष्मी समय पर आईं। सारे गाव मे घूमी पर कहीं रोशनी का नाम न था। जहा देखो, अधेरा-ही-अधेरा, विवश होकर वह उस गरीब ब्राह्मण के घर पहुची। परन्तु बहू ने तो पहले ही से किवाड वन्द कर रक्खे थे। लक्ष्मी अदर घुसने के लिए व्याकुल हो उठी। उन्होंने किवाड़ खटखटाये। बहू ने पूछा, "कौन है?" लक्ष्मी ने अपना नाम-ठिकाना बतला दिया।

बहू ने कहा, "दूसरा घर देखिये। मुझ गरीव के यहा आपका क्या सत्कार हो सकेगा!"

लक्ष्मी वहा से चल दी। परन्तु जाय कहा? हर घर मे अधेरा छाया था। हारकर फिर उसी दरवाजे पर आईं, बोली, 'हे कुलदेवी, तुम जो कहोगी, सब पूरा करूगी। मुझे भीतर आ जाने दो।"

बहू ने कहा, "तुम शौक से आ सकती हो, लेकिन पहले वचन दो कि आगे कभी इस घर मे तगी नही रहेगी और सब लोग हमेशा सुखी रहेगे।"

लक्ष्मी ने वचन दे दिया और उस दिन से उस घर का भाग्य पलट गया और सब आनद से रहने लगे।

: १५ :

"जस करनी तस भोगहू ताता"

किसी गाव मे एक जुलाहा रहता था। वह बहुत ही गरीब था। किसी दिन एक बार, तो किसी दिन आधा पेट खाकर अपना काम चलाता और किसी दिन बेचारे को वह भी नसीब न होता।

उसके एक लड़की पैदा हुई। वह दूज के चाद की तरह दिन-ब-दिन बढने लगी। देखने मे वह परी-जैसी सुन्दर लगती थी। जब वह सयानी हुई तो उसके पिता ने एक गरीब जुलाहे से उसकी शादी कर दी। पति के घर की भी पिता जैसी ही हालत थी। वहा भी उसे भर-पेट भोजन नही मिलता था।

एक दिन वह अपने पति से बोली, "हम सब इतनी गरीबी मे दिन बिता रहे है। कबतक ऐसे चलता रहेगा ?"

जुलाहा बोला, "पर दूसरा चारा क्या है ?"

"अगर तुम मुझे एक चरखा और कुछ रुई ला दो तो मै कोई ऐसी जुगत निकालूगी, जिससे हमारे दिन फिर जाय।"

जुलाहे ने दूसरे ही दिन पैसा उधार लेकर चरखा और रुई लाकर दे दिये।

जुलाहे की स्त्री जितनी रूपवती थी, उतनी ही गुणवती भी थी। वह सूत कातकर करघे पर बढिया चीजे बुनती। सुन्दर-सुन्दर धोतिया और रग-बिरगे कपड़े तैयार करती।

धोतियो पर बढिया किनारा लगाती और कपड़ों पर भाति-भांति के फूल बनाती। उसकी कारीगरी को देखकर लोग चकित रह जाते। कुछ ही दिनों में घर की गरीबी दूर हो गई।

जुलाहे की स्त्री की कारीगरी की बात सारे देश मे फैल गई। बडे-बडे राजा-रजवाड़ो से कपडे की माग आने लगी। रईस लोग उसके बनाये कपड़ो को मुह-मागे दाम मे खरीदने लगे।

जुलाहे की स्त्री ने एक बार बड़ी सुन्दर दरी तैयार्र की। वह दरी ऐसी थी कि वैसी दुनिया मे कभी न बनी थी। उस दरी पर सारे राज्य का नक्शा बनाया गया था। उसमे नगर और गांव, जंगल और खेत, पहाड और झरने, आसमान मे उडते पंछी, जंगली बाघ-सिह आदि नाना प्रकार की चीजें दिखाई गई थी।

तैयार होने पर उसने वह दरी अपने पति को दी और बोली, "इसे ले जाकर राजा के यहा बेच आओ। राज दाम पूछे तो तुम अपनी ओर से मत बताना। कहना कि दरी का दाम दरी ही बतावेगी। या जो राजा दे सो ले लेना।"

जुलाहे ने दरी कधे पर रक्खी और राज-दरबार की ओर चल दिया।

रास्ते मे एक धनी सौदागर ने उसे रोककर पूछा, "कहो भाई, इस दरी का क्या लोगे?"

"दरी का मोल यह दरी ही बतावेगी। मै कुछ नही जानता।" जुलाहे ने कहा।

सौदागर सोचता रहा, सोचता रहा, किन्तु वह उसका दाम तय नही कर पाया। इतने मे एक दूसरा सौदागर आया।

फिर तीसरा। फिर चौथा। बाद मे पाचवा और छठा। इस तरह देखते-देखते वहा सौदागरो का जमघट हो गया। सब-के-सब दरी को देखकर चकित थे, किन्तु दरी के दाम का कोई फैसला नही कर पाता था।

उसी समय राजा का दीवान 'खडखडिया' पर सवार होकर उधर से गुजरा। भीड देखकर वह 'खडखडिया' से उतर पड़ा और वहा आया। उसे देखते ही भीड ने उसे रास्ता दे दिया। दीवान ने दरी देखी। देखकर बहुत खुश हुआ। उसने सोचा, यह दरी तो राज-दरबार के योग्य है।

दीवान ने जुलाहे से पूछा, "यह दरी तुम कहा से लाये हो ?"

जुलाहा बोला, "मेरी स्त्री ने बुनकर तैयार की है।"

दीवान ने कहा, "तो, इसकी क्या कीमत है ?"

जुलाहा बोला, "मै नही जानता। मेरी स्त्री ने बताया कि इसे तुम राज-दरबार मे ले जाओ। दरी का दाम दरी आप बोलेगी। या राजा जो दाम लगा, सो ले लेना।"

दीवान ने कहा, "ठीक कहते हो। राज-दरबार के अलावा इस दरी का दाम कौन लगा सकता है। अच्छा, तो लो ये दो लाख अशर्फिया।"

जुलाहे ने अशर्फिया ले ली और दरी देकर अपने घर चला गया।

दीवान दरी लेकर फौरन राजा के पास पहुंचा और उसे राजा को दिखाया।

राजा अपनी आखो के सामने अपने सारे राज्य का चित्र देखकर दग रह गया।

जब रात को वह अपने पलंग पर लेटा तो उसे नीद नही आई। बार-बार उस दरी को बुननेवाली स्त्री के बारे में उसके मन मे विचार उठते। सोचता—वह कितनी सुन्दरी होगी, जिसने इतनी अच्छी दरी तैयार की है! उसे देखना चाहिए और उससे शादी करनी चाहिए।

सारी रात पलकों पर बीती। सवेरा हुआ। राजा ने मामूली आदमी के कपड़े पहने और उसी गाव को चल पडा, जहा जुलाहे का घर था। खोजते-खोजते वह उसके घर पर पहुच गया। दरवाजा खटखटाया। जुलाहे की स्त्री ने दरवाजा खोला। राजा ने जैसे ही उसे देखा कि खड़ा-का-खडा रह गया। वह कुछ कह न सका। उसके सामने मानों परी खडी थी।

जुलाहे की स्त्री ने यह देखा तो बडी हैरान हुई। कुछ देर तक उसने राह देखी कि वह कुछ कहे, पर जब वह चुप ही रहा तो उसने उसका कधा पकड़कर उसे घुमा दिया और दरवाजा बन्द करके भीतर चली गई।

राजा को इससे बड़ी चोट लगी। वह सोचने लगा—"मै यहां अकेला क्यो आया? फौज को साथ लाता तो अभी इसे अपनी रानी बनाकर ले जाता। ऐसी सुन्दर स्त्री एक जुलाहे के घर मे रहे, यह ठीक नही है।"

राजा महल मे लौट आया। अब उसके मन मे पाप जोर करने लगा—चाहे जैसे भी हो, जुलाहे की स्त्री को छीन लेना चाहिए।

इसके बाद राजा ने अपने दीवान को बुलाया और बोला, "मै जुलाहे की स्त्री से शादी करना चाहता हू। अगर तुम मेरी मदद करोगे तो मै तुम्हे इनाम मे आधा राज्य दे दूगा।

अगर स्त्री न मिली तो तुम्हें भाड़ मे झुकवा दूगा ।"

दीवान यह सुनकर बहुत परेशान हुआ । वह क्या करे ? कई दिन निकल गये । वह रात-दिन इसी सोच मे डूबा रहता था कि आखिर क्या हो । बहुत सोचा, लेकिन कोई उपाय नही सूझ पडा । वह उदास रहने लगा । सवेरे-शाम गगा-स्नान करने का उसका नियम था । वह गगा-किनारे जाता था और स्नान करके वही पूजा किया करता था । अब बेचारे का वह नियम छूट गया । जब उसे नियम की याद आती, वह गगा-किनारे चला जाता, स्नान करता और चुपचाप वहा वैठा रहता ।

एक गडरिया वहा भेड चराया करता था । वह हमेशा दीवान को बडे तडके स्नान-पूजन करते देखा करता था । परन्तु कई दिन से उसने देखा कि वह कभी दिन चढे आता है तो कभी दोपहर को और उसके चेहरे पर परेशानी छाई रहती है । उसने एक दिन मौका देखकर दीवान से पूछा, "दीवानजी, आजकल आप इतने उदास क्यो रहते हैं ? बडे सवेरे आप सव दिन यहा आ जाया करते थे, पर कुछ दिनो से इस नियम मे ढिलाई पड़ गई है । क्या बात है ?"

दीवान ने कहा, "अरे भाई, क्या वताऊं ! वताने मे फायदा भी क्या ? तुम क्या कर सकोगे ? राजा ने मेरे सामने एक ऐसी मुसीवत खडी कर दी है कि कुछ न पूछो ।"

गडरिया बोला, "मुझे वताइये तो सही । मै आपकी मदद करने की पूरी कोशिश करूगा । देखिये, अकल ऐसी चीज है कि वह किसी एक के ही हिस्से मे नही आती । जुगत वैठ जाने पर छोटा आदमी भी वड़ा काम कर डालता है । फिर मैं आपके काम नही भी आ सका, तो भी मै आपका कुछ विगाड़ूगा तो

नही । आप बेफिकर होकर बताइये ।"

दीवान ने सोचा, गडरिया ठीक कह रहा है। बात बता देने मे कोई हर्ज नही है। भगवान की लीला को कौन जानता है !

यह सोच दीवान ने उसे सब हाल बता दिया।

गडरिया बोला, "दीवानजी, एक उपाय कीजिये। हो सकता है, काम बन जाय। जुलाहा-जाति का आदमी बहुत सीधा होता है। अगर उसकी स्त्री भी भोली-भाली हुई तो उससे बहुत आसानी से निबटा जा सकता है। कुछ ऐसी तरकीब लगाइये कि उसकी समझ पर ताला पड जाय। आप राजा मे कहिये कि वह जुलाहे को स्वर्ग मे यह पता लगाने के लिए भेजे कि वहा उसके पिता का क्या हाल-चाल है। अगर वह वहा जाने को राजी हुआ तो पहले तो उसे स्वर्ग का ठिकाना मिलना ही मुश्किल होगा और अगर कही वह वहा पहुच ही गया तो वही का हो जायगा।"

दीवान को यह सलाह ठीक लगी।

दूसरे दिन वह राजा के दरबार मे हाजिर हुआ और राजा से बोला, "महाराज, मैने जुलाहे से उसकी स्त्री को अलग करने का रास्ता खोज लिया है।"

राजा बहुत खुश हुआ। दीवान ने राजा को तरकीब बताई। राजा ने तुरत जुलाहे को पकड़कर लाने का हुक्म दिया।

जुलाहे के आने पर राजा ने कहा, "तुमने बड़ी ईमानदारी से आजतक हमारी सेवा की है। तुम्हारी कोई शिकायत सुनने को नही मिली है। तुम्हारे जैसे नेक और सच्चे आदमी की

मुझे आज जरूरत पड गई है। आज मै तुम्हे एक जरूरी काम सौंपता हू। तुम स्वर्ग मे जाकर यह मालूम करो कि मेरे पिताजी का वहा क्या हाल है। पता लगाकर आओगे तब मैं तुम्हे बहुत-सा धन इनाम मे दूगा। अगर तुम नही जाओगे, तो तुम्हे सूली पर चढवा दूगा।"

यह सुनकर जुलाहे के प्राण सूख गये। उसने कहा, "मैं सोचकर जवाब दूगा।"

वह घर आया तो मारे चिन्ता के पीला पड रहा था। उसकी स्त्री ने पूछा, "क्यो, तुम इतने उदास क्यो हो? ऐसी क्या मुसीबत आ पड़ी है! मै उसका उपाय सोचूगी।"

जुलाहे ने राजा का हुक्म उसे सुना दिया।

"यह भी कोई काम है!" उसकी स्त्री ने कहा, "यह तो बडी मामूली चीज है। खाना खाकर आराम से सोओ। रात का सोचा कभी सच नही होता। सुबह मैं इसका उपाय बताऊगी।"

दूसरे दिन बडे सबेरे जुलाहा उठा। उसकी स्त्री ने कुछ पकवान बनाकर रास्ते के लिए दिये। साथ ही सोने की एक अगूठी दी। बोली, "राजा के पास जाओ और कहना कि मेरे साथ अपने दीवान को भी भेज दीजिये, जिससे वह इस बात की गवाही दे सके कि मै सचमुच स्वर्ग मे हो आया हू। अगर वह तैयार हो जाय तो दीवान को साथ लेकर रास्ते मे इस अगूठी को डाल देना। आगे-आगे यह अगूठी लुढकती जायगी और पीछे-पीछे चलते जाना। जब अगूठी रुक जाय तो समझ लेना कि स्वर्ग आ गया।"

जुलाहे ने पकवान की पोटली और अंगूठी ली और सीधा

राजा के यहां पहुंचा और दीवान को साथ भेजने को कहा। राजा इन्कार न कर सका। दीवान और वह दोनो स्वर्ग के लिए रवाना हुए।

जुलाहे ने अगूठी नीचे डाल दी और वह लुढक-लुढकर आगे बढने लगी। उसके पीछे-पीछे चलते-चलते उन्होने खुले मैदान, जंगल, पहाड़, झरने, नदी-नाले, जाने क्या-क्या पार किये।

जव दोनो चलते-चलते थक जाते तो पोटली से निकालकर कुछ खा-पी लेते और फिर आगे का रास्ता नापते।

चलते-चलते वे बहुत दूर निकल गये। दीवान थककर चूर हो गया। तभी एक बियावान जगल आया, जहां एकदम सुनसान था। कोई आवाज तक सुनाई नही देती थी। वहा पहुचकर अंगूठी रुक गई।

जुलाहे और दीवान ने वहां ठहरकर कुछ खाया-पीया। उसी समय उन दोनों ने क्या देखा कि एक बूढा आदमी लकडी से भरी एक बहुत बडी गाड़ी खीचे ला रहा है। बोझ के मारे उसकी कमर दोहरी हो रही थी और जीभ निकालकर वह बुरी तरह हांफ रहा था। दो जल्लाद जैसे आदमी एक दाईं ओर से और दूसरा बाईं ओर से उसपर कोडे बरसा रहे थे।

जुलाहे ने दीवान से कहा, "वह बूढा आदमी कौन है? पहचानो। मै तो उसे जानता नही।

दीवान अचरज से बोला, "अरे, यही तो है राजा के पिता। हाय-राम, कैसा हाल हो रहा है इनका?"

"ओ धर्मराज के दूत," जुलाहे ने चिल्लाकर कहा, "उस बूढे आदमी को जरा सास तो ले लेने दो। मै उससे बात करना चाहता हूं।"

यमदूतों ने लाल-लाल आखो से उसकी ओर देखा। बोले, 'हमारे पास रुकने का समय नही है। इन लकड़ियो को कौन ढोयेगा ?"

जुलाहे ने कहा, "इसकी क्या चिन्ता है। यह देखो, मेरे साथ एक आदमी है। यह उसकी जगह ले लेगा।"

इसपर यमदूत राजी हो गये। उन्होने बूढे आदमी को अलग कर दिया और उसकी जगह दीवान को गाडी मे जोत दिया। दीवान ठिठका तो उन्होने कसकर कोडे लगाने शुरू कर दिये। बेचारा दीवान उस बूढे की तरह दोहरा होकर गाडी खीचने लगा।

जुलाहे ने राजा के बूढे पिता से पूछा, "महाराज, आपके क्या हाल-चाल हैं ?"

"आह, मेरे नेक भाई," राजा के पिता ने कहा, "यहा मेरा बहुत बुरा हाल है। जैसा बोया था, वैसा काट रहा हू। रामायण मे ठीक ही कहा है—"जस करनी तस भोगहू ताता, नरक जात काहे पछताता।" सो भैया, तुम जब लौटकर नगर में जाओ तो मेरे बेटे को मेरी याद दिलाना और कहना कि वह प्रजा के साथ किसी तरह का बुरा बर्ताव न करे, नही तो मेरी तरह ही उसे भी नरक की मुसीबते भुगतनी पडेंगी। करनी देखी जाती है, मरनी के समय।"

उस दोनो की बातचीत देर तक चलती रही। यमदूत गाड़ी लेकर गये और उसे खाली करके वापस लौट आये। जुलाहे ने राजा के बूढे पिता से विदा ली। दीवान भी उसके साथ हो लिया। दोनो अपने नगर को रवाना हुए।

कुछ दिन के बाद वे अपने नगर मे पहुंच गये। सीधे

राजा के महल मे गये। राजा की निगाह जब जुलाहे पर पडी तो वह गुस्से मे भरकर बोला, "इतनी जल्दी वापस कैसे लौट आये ?"

जुलाहा बोला, "महाराज, मै स्वर्ग मे आपके पिता से मिलकर आया हू। उन्होने कहलवाया है कि उनकी बड़ी दुर्गति हो रही है। अगर आप उनकी तरह अपनी दुर्गति नही करवाना चाहते तो अपनी प्रजा के साथ बुरा वर्ताव न करें।"

यह सुनकर राजा और अधिक लाल-पीला हो गया। बोला, "तुम यह कैसे साबित कर सकते हो कि सचमुच स्वर्ग गये और मेरे बूढे पिता से मिलकर आये हो ?"

जुलाहा बोला, "महाराज, दीवानजी मेरे साथ थे। ज़रा इनकी पीठ देख लीजिये। यमदूतों के कोडों ने इनका क्या हाल कर दिया है !"

राजा ने दीवान के कपडे उतरवाकर पीठ देखी तो उसकी आखे खुल गई। वह अपने किये पर पछताने लगा। उसने जुलाहे से माफी मांगी और वादा किया कि आगे वह ऐसी गलती कभी नही करेगा।

राजा ने उसकी स्त्री को छोड़ दिया। जुलाहा अपनी सती स्त्री के साथ घर आया और आनन्द से दिन बिताने लगा।

१६ :

न कोई छोटा, न कोई वड़ा

किसी नगर मे एक राजा राज करता था। वह वहुत ही न्याय-प्रिय और प्रजा का भला करनेवाला था। उसके राज्य मे प्रजा सुखी थी। चोर, डाकू और बुरे लोग उसके राज्य मे नही टिक पाते थे। साधु-सतो का सत्कार होता था।

राजा वरावर अच्छी-से-अच्छी वाते सोचता रहता था। जो भी साधु-महात्मा उसके यहा आता, उसकी पूजा होती और वहुत ही भावना से राजा पूछता, "महाराज, यह वताइये कि एक आदमी घर-द्वार, राज-पाट, माता-वहन, स्त्री-पुत्र को छोड़कर सन्यासी वन जाता है और दूसरा दुनिया की माया में लिपटकर गृहस्थ-धर्म का पालन करता है। इन दोनो मे श्रेष्ठ कौन है ? जो श्रेष्ठ होगा उसी धर्म का पालन करने की मैं कोशिश करूंगा। मेरे विचार से तो सन्यास सवसे महान और कठिन धर्म है। जो इस धर्म का पालन करता है, उसे मुक्ति मिलती होगी।"

राजा के दरवार मे अनेक प्रकार के विद्वान और साधु-सन्यासी आते थे। वे अपने-अपने ढंग से अपना विचार प्रकट करके चले जाते थे, किन्तु राजा को किसीसे सतोष न होता था।

एक वार की वात है। एक साधु राजा के यहां आया। राजा ने उससे भी वही सवाल किया। सच वात यह है कि राजा का मन राज-काज मे नही लगता था। वैराग्य उसके

सिर पर सवार रहता था।

साधु बहुत ही विद्वान था। उसने राजा को समझाते हुए कहा, "राजन्, अपने-अपने स्थान पर दोनो बड़े हैं। किसीको छोटा नही कहा जा सकता।"

"सो कैसे?" राजा ने पूछा।

"इसका जवाब मैं जरा देर से दूंगा, राजन्।" साधु ने कहा, "आपको थोड़ा धीरज रखना होगा और कष्ट भी सहन करना पड़ेगा। कुछ दिनो तक आपको मेरे साथ रहना पडेगा।"

राजा राजी हो गया। राजपाट युवराज को सौंपकर फकीरी बाना धारण किया और साधु के साथ चल पडा। नाना देश, जगल, पहाड़, झरने और बड़े-बडे मैदानो को पार करते हुए दोनो जने एक बहुत बड़े रजवाड़े मे पहुचे।

उस राजा के राज्य मे कोई उत्सव हो रहा था। साधु और राजा ने देखा कि सब लोग सुन्दर पोशाकों और आभूषणो से सजकर सभा मे विराजमान हैं। वहा कोई घोषणा की जा रही थी। कौतूहलवश दोनों वही ठहर गये। घोषणा यह थी, "राजकुमारी अपना वर स्वय चुनेगी।"

राजकुमारी बड़ी सुन्दर थी। वह दुनिया के सबसे सुन्दर युवक से, जो विद्या-बुद्धि मे भी बढ़-चढ़कर हो, विवाह करना चाहती थी। परन्तु अबतक राजकुमारी को किसीका रूप अच्छा नहीं लगा तो किसीकी विद्या-बुद्धि से सतोष नही हुआ। ऐसे अवसर कई बार आ चुके थे और भिन्न-भिन्न देशों के राजकुमार आ-आकर लौट गये थे।

राजकुमारी हाथ मे वरमाला लिये खुली पालकी पर वर

वरण करने निकली। वह चारो ओर घूम आई, परन्तु उसे एक भी योग्य वर नही दिखाई दिया। लोग निराश हो चले। सब किया-कराया योही गया। ठीक उसी समय एक बहुत ही सुन्दर युवक सन्यासी, जिसका मुख-मंडल सबेरे के सूरज की तरह दमक रहा था, आकर एक स्थान पर चुपचाप तमाशा देखने के लिए खडा हो गया।

कहार पालकी लेकर घूमता-घामता वही आया। राजकुमारी ने सन्यासी का चेहरा ऊपर से नीचे तक देखा। देखकर उसपर मुग्ध हो गई। उसकी आखे बद हो गईं। उसने सिर झुकाकर वरमाला उसीके गले मे डाल दी और उसके पैरो पर गिर पडी।

युवक सन्यासी ने तुरत वरमाला तोडकर फेक दी और बोला, "यह क्या तमाशा है! मै संन्यासी हू। यह बन्धन मेरे लिए नही है।"

राजकुमारी के पिता ने जब यह दृश्य देखा तो उन्हे लगा कि सन्यासी शायद निर्धन है, इसलिए मेरी बेटी से ब्याह करने मे झिझक रहा है। सो उन्होने घोषणा की कि राजकुमारी ने जिसे वरमाला पहनाई है, उसे मैं दहेज मे आधा राज्य दे दूगा और मेरे मरने पर वही सारे राज्य का अधिकारी होगा।

सन्यासी बोला, "मै मोह-माया के झझट से कबका नाता तोड चुका हू। मुझे यह सब नही चाहिए।" इतना कहकर वह वहा से चलता बना।

लेकिन राजकुमारी उस सन्यासी पर इतनी मोहित हो चुकी थी कि वह किसी भी हालत मे अपना निश्चय बदलने

को तैयार नही थी । वह उसका पीछा यह कहकर करने लगी कि अगर वह मुझे नही अपनायगे तो मै अपने प्राण त्याग दूगी ।"

यह सब हाल देखकर साधु ने राजा से कहा, "राजन्, चलिये हम लोग इस जोड़ी का नाटक देखें। हा, इस तरह चलिये कि इस जोड़ी को हमारा पता न चले ।"

सन्यासी वरमाला को तोड़कर और राज्य के लालच को ठुकराकर राजा की नगरी से बाहर हो गया और बहुत दूर निकल गया । जाते-जाते उसने एक पहाड़ और जंगल में प्रवेश किया और एक घाटी मे जाकर अदृश्य हो गया ।

राजकुमारी ने उसे बहुत खोजा, किन्तु पता नही पा सकी । जब सन्यासी के मिलने की उसे कोई आशा न रही तो वह उसी जगल मे एक पेड़ की छाया मे चूर होकर गिर गई और रोने लगी ।

कुछ देर के बाद राजा और साधु राजकुमारी के पास पहुच गये । साधु ने उसे ढांढस बधाते हुए कहा, "बेटी, रोओ मत, हम तुम्हारी हर तरह से मदद करेंगे, लेकिन अब तो अंधेरा हो चला है । हम यही रात गुजारे । सवेरा होने पर हम तुम्हारी खोज मे योग देंगे ।"

तीनो रातभर के लिए उसी पेड़ के नीचे टिक गये ।

उस पेड़ पर एक घोसला था, जिसमे एक चिड़ा, एक चिड़िया और उनके तीन बच्चे रहते थे ।

चिडा ने देखा कि तीन महमान उसके घर मे आकर टिक गये है । ठंड का समय है । ईंधन है नही, जो उनके सामने जला दे । यह बात उसने चिड़िया से कही ।

चिड़िया बोली, "ठहरो, मै कुछ उपाय करती हूं ।"

चिड़िया फुर्र से उडी और कही से खोजकर एक जलती हुई लकड़ी अपनी चोच मे उठाकर ले आई और महमानो के सामने गिरा दी। महमानो ने सूखे पत्ते और सूखी टहनियां चुनकर आग जला ली।

लेकिन चिडा को इतने से ही सतोष नही हुआ। उसने चिड़िया से कहा, "सुनती हो। आग तो जल गई। लेकिन महमानो को खिलोओगी क्या ? वे रातभर भूखे रहे तो बडा पाप लगेगा। घरआए महमान को भोजन कराना गृहस्थ का सबसे बड़ा धर्म है।। घर मे कुछ है नही। लेकिन देखो जी, कुछ-न-कुछ तो करना ही पड़ेगा। तुम बाल-बच्चो की देख-रेख करना, मैं अपने को अतिथि भगवान के अर्पण किये देता हूं। देह धरे का दण्ड चुक जायगा।"

चिडिया कुछ कहे कि उससे पहले ही चिडा धधकती आग मे गिर पड़ा और जरा-सी देर मे भुनकर खाने योग्य बन गया।

महमानो ने उसके गिरते ही बचाने की कोशिश की, पर बचा नही पाये।

पति का त्याग देखकर चिड़िया ने सोचा कि महमान तीन है और सब-के-सब भूखे है। एक चिडा के मांस से उनका पेट कैसे भरेगा ? पत्नी के नाते उसका परम धर्म हो जाता है कि वह भी अपने पति के काम मे योग दे, जिससे वह सफल हो।

यह सोच वह भी तीर की तरह आग मे गिर गई।

अब रहे तीन नन्हे-नन्हे बच्चे। उन तीनो ने देखा कि मा और बाप का मास मिलाकर भी महमानो का पेट नही भरेगा। उन तीनो ने आपस मे विचार किया कि माता-पिता के अधूरे काम को पूरा करना सन्तान का धर्म है। सो वे भी

उसमें मदद करें ।

यह सोचकर वे तीनों भी आग में कूद पड़े ।

पक्षियों की यह अद्भुत लीला देखकर तीनों मेहमान चकित रह गये । मांस किसीसे नहीं खाया गया ।

उस दृश्य को देखकर राजकुमारी को बड़ी दया आई । उसने साधु से विनती की, "बाबा, आप अपने योग-बल से इन पक्षियों को जिला दीजिये ।

साधु ने भगवान का नाम लेकर अपने बाएं हाथ की छोटी अंगुली काटी और खून की बूंदें जैसे ही उन पक्षियों पर पड़ीं कि वे सब जीवित हो उठे ।

तीनों मेहमानों को बड़ी खुशी हुई ।

साधु ने राजा से कहा, "राजन्, तुमने देख लिया, हर आदमी अपनी-अपनी जगह पर बड़ा है । हरेक धर्म की अपनी महत्ता है । अगर तुम्हें गृहस्थ बनकर रहना है तो इन चिड़ियों की तरह जीवन को परोपकार का साधन और यज्ञ समझो । यदि तुम संसार से विरक्त होकर संन्यास में विश्वास रखते हो तो उस संन्यासी की तरह रूप, धन-संपदा और राजपाट की ओर आंख उठाकर भी मत देखो । गृहस्थ और संन्यासी दोनों अपनी-अपनी जगह पर बड़े हैं । दोनों का काम अलग-अलग है । न कोई छोटा है, न कोई बड़ा ।"

राजकुमारी गृहस्थ बनकर राजसुख भोगने की इच्छा रखती थी । साधु की बातें सुनकर उसकी आंखें खुल गईं ।

इसके बाद साधु ने राजकुमारी का ब्याह राजा से कर दिया और वे दोनों खुशी-खुशी अपने नगर में लौटकर आनंद से रहने लगे ।

: १७ .

रानी जीती, राजा हारा

किसी नगर मे एक ब्राह्मण रहता था। वह बड़ा विद्वान और सदाचारी था। उसकी पत्नी भी बहुत ही सुशील और घर के काम-काज मे बडी चतुर थी। उनके एक लडकी पैदा हुई। माता-पिता दोनों उसे बहुत प्यार करते थे। लड़की दिनो-दिन बढने लगी। देखते-देखते वह सयानी हो गई। एक दिन ब्राह्मणी ने ब्राह्मण से कहा, "बेटी के लिए अब वर ढूढो। उसका ब्याह कर देना चाहिए।"

पिता ने कभी सोचा ही न था कि उन्हे इतनी जल्दी लड़की के लिए वर ढूढना पडेगा। वह चिंता मे डूब गया। उसने पत्रा उठाया। पत्रा देखने पर मालूम हुआ कि शुभ लगन उसी मास मे है। फिर आगे तीन साल तक नही पड़ती थी। यह देखकर उसको बडी घबराहट हुई। ब्राह्मणी को यह पता चला तो उसे भी बडी बेचैनी हुई। परन्तु कुछ देर के बाद सोच-समझकर बोली, "अभी बीस दिन बाकी हैं। ठीक से वर खोजोगे तो इतने दिनों मे जरूर मिल जाना चाहिए। लड़की का भाग्य होगा तो तीन दिन मे मिल जायगा।"

ब्राह्मण बोला, "तुम ठीक कहती हो, लेकिन हमारे पास पैसा तो है नही। ब्याह कैसे करेंगे?"

पति और पत्नी दोनो देर तक विचार करते रहे।

उसी नगर मे एक राजा रहता था। उसने एक ऐसा

ब्राह्मण ने रात होने पर राज-महल के सामने की एक खिडकी खोल दी, जिससे राज-महल के ऊपर जलनेवाली बत्ती दिखाई दे सके। ब्राह्मण रात-भर एकटक उसीकी ओर देखता रहा।

सबेरा हुआ। पहरेदारो ने ताला खोला तो देखते क्या है कि ब्राह्मण जीवित है। पहरेदार उसे राज-दरबार मे ले गये। ब्राह्मण को जीवित देखकर राजा दग रह गया। उसने पूछा, "महाराज, यह बताइये कि आपने उस ठडे महल मे रात कैसे गुजारी ?"

ब्राह्मण ने कहा, "राजन्, आपके राज-महल पर जो बत्ती जल रही थी, उसीकी ओर मै एकटक देखता रहा। रात कट गई।"

राजा ने गर्दन हिलाते हुए कहा, "महाराज, इसीसे तो आप बच गये, नही तो अबतक जितने भी उस महल मे गये, कोई जिन्दा नही लौट सका। और आप साठ बरस के बूढे ब्राह्मण जैसे-के-तैसे लौट आये! आपकी देह ज़रूर ही बत्ती की गरमी पाती रही होगी। इसलिए आप इनाम पाने के अधिकारी नही हैं।"

ब्राह्मण निराश होकर घर चला आया।

राजा के इस अन्याय की चर्चा सारे नगर मे फैल गई। उसी नगर मे एक छोटा राजा रहता था। वह बडे राजा से डरता रहता था। उस छोटे राजा ने सोचा, जब ब्राह्मण पर ऐसा जुल्म हुआ है, तब मेरे ऊपर भी कभी-न-कभी राजा ऐसा ही अन्याय कर बैठेगा। वह इसी सोच-विचार मे उदास बैठा था कि उसकी बेटी वहा आ पहुंची। पिता को उदास देखकर उसने उदासी का कारण पूछा। पहले तो राजा ने टालमटोल

देखिये, खीर आग पर चढ़ा रक्खी है।

राजा ने देखा कि ऊपर एक छीके पर पीतल की पतीली टंगी हुई है और उसके नीचे आठ-नौ हाथ पर आग जल रही है। राजा ने राजकुमारी से कहा, "राजकुमारी, इस हालत मे तो खीर कभी नही पक सकेगी। इतनी ऊचाई पर आग की गर्मी पतीली तक कैसे पहुंच सकती है?"

राजकुमारी ने मुस्कराकर कहा, "महाराज, जब ठंडे महल मे बन्द ब्राह्मण को आपके राजमहल की बत्ती से गर्मी पहुच सकती है तो आठ-नौ हाथ ऊपर खीर क्यो नही पक सकती?"

राजा सारी बात समझ गया, पर कुछ बोल नही सका। राजकुमारी से हारकर उसने ब्राह्मण को बुलाया और उसे खूब इनाम दिया।

राजा ने इनाम तो दिया, लेकिन राजकुमारी की बात उसे चुभ गई और उसने उससे बदला लेने की ठानी। अगले दिन राजा ने छोटे राजा की पुत्री की चतुराई की दरबार मे बडी तारीफ की और उससे विवाह करने की घोषणा की।

छोटे राजा के मन के खिलाफ होने पर भी तय की हुई तिथि को बरात चढी और छोटे राजा के महल मे आई।

जब भावरे पड़ने लगीं तो बडे राजा ने साढे तीन ही फेरे किये। चौथा फेरा पूरा किये बिना ही बैठ गया।

बरात विदा करवाकर राजा अपने महल मे आया। रात को राजा-रानी का मिलन हुआ। रानी ने अधूरे फेरे छोड़कर उसका जो अपमान किया गया उसकी याद दिलाई तो राजा ने ब्राह्मण को उसकी इच्छा के खिलाफ जबर्दस्ती दान दिलाने

उसने कहा, "अगर मैंने इस दुष्ट राजा से चक्की मे कोदो नही दलवाया तो मेरा नाम जुलुमसिंह नही।"

माता की आज्ञानुसार जुलुमसिंह ने सारे नगर मे ड्योंढी पिटवा दी कि राजा जालिमसिंह के नगर मे जुलुमसिंह आया है। वह ठगने का काम करेगा, लेकिन ठगाई मे नही आवेगा।

एक दिन जुलुमसिंह ने सेठ का रूप धारण किया। नगर मे पहुचकर एक तमोली की दुकान पर गया। एक सौ पान खरीदे। पैसा देते हुए कहा, "अभी ये पान अपने पास रक्खो। घर जाते समय ले लूगा।"

वहा से चलकर वह एक सेठ की दुकान पर पहुचा। एक सौ रुपये का कपडा खरीदा और बोला, "सेठजी, किसी दूकानदार से सौ दिलवादू तो ले लोगे ?"

सेठ ने कहा, "इसमे कौन-सी बात है। दिलवा दोगे तो ले लेंगे। तुम्हारा दिल चाहे तो योही ले जाओ। कौन बड़ी रकम है।"

जुलुमसिह सेठ को साथ लेकर चला। बोला, "कोई बात नही, सेठजी। जब रुपये है तो फिर कर्ज सिर पर क्यो ले जाऊ ?" बातें करते-करते वह तमोली की दूकान पर पहुच गया। रौबीली आवाज मे बोला, "ओ तमोली, वे सौ सेठजी को दे देना।"

तमोली बोला, "बहुत अच्छा।"

जुलुमसिह अपने घर की ओर बढा।

सेठजी तमोली की दूकान पर पान खाने लगे। चलते समय उन्होने सौ मागे।

तमोली ने सौ पान का बडल आगे बढा दिया।

पोखर के किनारे के पेड़ के नीचे। ठडी हवा मे हजामत बनाऊगा।"

पाचों सिपाही पोखर के किनारे पेड की छाया मे चले गये। जुलुमसिंह ने बडे प्रेम से सबकी हजामत बनाई और सिपाहियों से कहा, "सरकार, आप पाचो आदमी एक-एक बार पोखर मे डुबकी लगाओ। जो जितनी देर मे निकलेगा, उसकी दाढ़ी उतनी ही देर मे बढेगी।"

"ठीक है।" सिपाही राजी हो गये।

इसके बाद पाचो सिपाही पोखर मे डुबकी लगाने लगे। हरेक अपने मन मे सोच रहा था कि मैं सबसे पीछे निकलूगा। इसी बीच मौका पाकर जुलुमसिंह सबके कपडे-लत्ते और हथियार लेकर चम्पत हो गया।

जब सिपाहियों मे से एक ने तग आकर अपना सिर बाहर निकाला तो देखता क्या है कि बाहर किनारे पर एकदम सुनसान है। न वह नाई है, न उनके कपडे-लत्ते, न उनके हथियार। पाचों नगे थे। बाहर निकले तो कैसे? सोचने लगे—हो-न-हो, वह ठग था। हम लोगो को चकमा देकर चला गया। अब तो राजा से भी सजा मिलेगी।

उधर जुलुमसिंह ने घर पहुचकर अपनी मां को सारा समाचार दिया। फिर ज्योतिषी का रूप धर, पोथी-पत्रा साथ मे ले सिपाहियो के घर पहुंचा। वहा जाकर उसने कुशल-समाचार पूछना शुरू किया।

सिपाहियों के घरवालो ने कहा, "क्या बताऊं पंडितजी, नगर मे एक ठग आया हुआ है। सब-के-सब नगर की रखवाली करने सबेरे के गये हैं। अभी तक नही लौटे। रात होने को

गई। पता नही, अबतक क्यों नही आये !"

ज्योतिषी बोले, "यह कैसा ठग है! ठगता है, पर ठगाई नही खाता। आज उसीके पीछे वे लोग परेशान हैं। आज तुम उनके आने की राह मत देखना। हा, रात को पाच डायने तुम्हारे घर आनेवाली है। वे बिल्कुल नगी होगी और अपनेको सिपाही कहेगी। उनसे सावधान रहना। उनको भगाने के लिए मकान की छत पर ईंट-पत्थर जमा करके रख लेना और उनके आते ही उन्हे भगा देना, नही तो वे तुम्हारे घर को लूट लेगी और तरह-तरह के जादू-टोने कर देगी। उनके वहकावे मे मत आना।"

इतना कहकर अपना सीधा लेकर ज्योतिषी रफूचक्कर हो गये।

ज्योतिषी के कहने के अनुसार सिपाहियो के घरवाले तैयार होकर बैठ गये। घडीभर रात बीतने पर पाचो सिपाही पोखर से निकलकर नग-धडंग अपने घर के पास पहुचे। उन्हे देखते ही ज्योतिषी महाराज की बात याद करके उनके घरवालो ने उनपर ईंट-पत्थर बरसाने शुरू किये। चोटों के मारे बेचारे बहुत रोये-चिल्लाये, अपना परिचय दिया, पर कौन विश्वास करता! अंत मे लहूलुहान होकर वे पाचो बेहोश होकर गिर पड़े। उन्हे मुर्दा समझकर घरवाले डरते-डरते उनके पास आये। रोशनी मे जब उन्हे देखा तो आखे खुली।

उधर राजा जालिमसिह ने सिपाहियो के न लौटने पर उनके घर आदमी भेजे। सारा हाल सुनकर राजा बहुत नाराज हुए और उन्हे नौकरी से निकाल दिया। ठग की गिरफ्तारी के लिए उन्होने और भी कड़ा प्रबन्ध किया।

उस दिन ठग कही बाहर नही निकला। उसकी माता ने तोते को खबर लाने शहर भेजा। उसने आकर बताया कि आज रात को राजा ने ठग को पकडने के लिए थानेदार को तैनात किया है। आधी रात बीत जाने पर जुलुमसिंह एक औरत का रूप धारण करके हाथ मे परात और उसमे चौमुख दिया'जलाकर नगर के दरवाज़े पर आया। आधीरात गये अकेली स्त्री को देखकर थानेदार ने उसे रोका, पूछा "कौन है ?"

स्त्री बोली, "मेरा पति बहुत बीमार है। मैं उसके भले के लिए चौराहे पर चौमुख दिया जलाकर पूजा करने जा रही हूं।"

औरत की बात अनसुनी करके थानेदार उसे कचहरी ले गया। वहा कठवेड़ी देखकर स्त्री ने थानेदार से पूछा, "यह क्या है, जी ?"

थानेदार वोला, "जो लोग चोरी-बदमाशी करते है, उनको इसी काठ मे फसाकर सजा दी जाती है। इसमे फसने के बाद आदमी बिना निकाले निकल नही सकता है।"

स्त्री ने नाज-नखरा दिखाते हुए कहा, "तुम भी गजब के थानेदार हो, जी। भला इस काठ मे आदमी को कैसे फसाया जा सकता है! ज़रा मुझे इसमे फसाकर दिखाओ तो जानू।"

थानेदार बोला, "हे सुन्दरी, तुम्हारे नाजुक शरीर को इसमे कैसे फसा सकता हू। काठ मे घुसते ही तुम्हारी कोमल चमड़ी छिल जायगी। फिर अगर तुम्हे काठ मे फसाने की बात किसीने राजा के कान तक पहुचा दी तो राजा मेरी जान ले लेगा। इसलिए मै खुद इसमे फंसकर तुम्हे दिखलाये देता हू।

तुम धीरे-से काठ के मुह को बन्द कर देना और मेरे कहने पर उसे खोल देना ।"

थानेदार के बताये ढंग से उस औरत ने थानेदार को काठ मे फंसा दिया । फिर उसके मुह पर कालिख-चूना पोतकर और उसके हथियार और पोशाक लेकर अपने घर का रास्ता लिया । घर आकर अपनी माता को सारा हाल कह-सुनाया ।

बडे सबेरे राजा ने सिपाहियो को कचहरी भेजा । वहा वे क्या देखते हैं कि थानेदार के मुह पर कालिख-चूना पुता हुआ है और वह नंग-धड़ंग काठ मे फसा सिर पीट रहा है ।

बिना कपड़े और बिना हथियार के थानेदार की खबर सुनकर राजा को बडा क्रोध आया । उसने उसे दिनभर उसी तरह काठ मे फसे रखने की आज्ञा दी । फिर नगर मे ढिंढोरा पिटवाया कि "जो कोई जुलुमसिह को पकडकर लावेगा, उसे मुंह-मांगा इनाम दिया जायगा ।"

नगर मे कोई भी ठग को पकडने के लिए तैयार न हुआ । उसी नगर में एक दूती रहती थी । राजा के दरबार मे पहुच-कर उसने राजा से कहा, "मै ठग को पकड़कर ला सकती हू ।"

राजा ने पूछा, "तुममे कौन-सी सिफत है कि तुम ठग को पकड़ सकती हो ?"

दूती बोली, "महाराज, मै तो ऐसे-ऐसे कमाल करके दिखा सकती हूं, जो किसीने आजतक न देखे हो और न सुने हो । अधिक क्या कहूं ? कहे तो आसमान मे छेद करके दिखा दू, तारे तोड़कर ला दू ।"

थोडी देर तक चुप रहने के बाद राजा ने सोचा, "जो इतने बड़े-बडे कमाल करके दिखा सकती है, वह जरूर

जुलुमसिंह को फंसा सकती है ।"

उसने पूछा, "ठग को फंसाने के लिए तुम्हे क्या चाहिए ?"

दूती बोली, "सोने का जेवर और बाग में झूला डालने के लिए रेशम की डोर ।"

उसे ये चीजे मिल गईं । रेशम की डोर ले, सोलहो सिगार कर, बत्तीसौ आभरण पहन, झमाझम करती हुई वह राजा के बाग मे पहुची और एक आम के पेड़ की छाया मे झूला डालकर झूलने लगी ।

इसकी खबर तोते ने जाकर रानी को दे दी ।

इस बार जुलुमसिह ने साधु का भेस बनाया और झोली मे दारू की बोतल डालकर घूमता हुआ बाग मे जा पहुंचा ।

वहा जाकर देखता क्या है कि एक बड़ी सुन्दर स्त्री सज-धजकर झूले पर झूल रही है । उसके जोड़ की सुन्दरी उस राज्य मे ही नही, सारे द्वीप मे नही थी ।

गेरुवे कपडो मे उस रसीले-छबीले युवक को देखते ही दूती उसपर मोहित हो गई और मुस्कराती हुई बोली, "दण्ड-वत्, बाबा !"

साधु ने मुस्कराकर आशीर्वाद दिया, "मनोकामना पूरन हो, देवी !"

इसके बाद दूती ने साधु महाराज से उसके साथ झूले पर झूलने को कहा । दोनो झूम-झूमकर झूलने लगे । झूलते-झूलते दूती की निगाह झोले मे रखी बोतल पर पडी । उसने उसे बाहर निकाल लिया । फिर क्या था ! उसने खूब चढाई और बेहोश हो गई । साधु ने तब उसकी पोशाक और गहने उतार लिये और उन्हे लेकर घर पहुचा ।

को दूर किसीके चिल्लाने की आवाज सुनाई दी।

घोडा दौड़ाता हुआ राजा फौरन वहा जा पहुचा। देखता क्या है कि एक फटे-हाल बुढिया गली मे चक्की पर कोदों दल रही है। वही चीख रही थी। राजा ने उसे चुप किया। पूछा, "क्या बात है?" वह बोली, "अभी कोई आया था। बुरी तरह से मुझे झकझोरकर मेरे घूसा मारा और भाग गया।" राजा ने पूछा, "वह किधर गया?" बुढिया के बताने पर राजा ने उधर ही घोडा दौडाया। कुछ दूर जाने पर राजा को फिर वही चीख सुनाई दी। राजा लौट आया। पूछने पर बुढिया ने कहा, "तुम्हारे जाते ही वह आ गया और एक घूसा फिर जमाकर चला गया।"

इस बार राजा ने दूसरी तरफ घोडा दौडाया, पर कही कुछ पता न चला।

जब दो-तीन बार ऐसा ही हुआ और वह आदमी पकड मे नही आया तो बुढिया ने कहा, "इस तरह वह ठग पकड मे नही आने का। तुम मेरी एक बात मानो तो ठग फौरन हाथ मे आ जायगा और तुम्हारी भाग-दौड बच जायगी।"

राजा ने पूछा, "सो कैसे?"

बुढिया बोली, "तुम मेरे कपड़े पहन लो और मै तुम्हारे। जब तुम मेरे कपडे पहनकर कोदो दलने लगोगे तो ठग बुढिया समझकर आवेगा। तुम मौका पाकर उसे पकड लेना। तब-तक मै तुम्हारे घोडे की रखवाली करूगी।"

बुढिया की बात राजा को ठीक लगी। उसने बुढिया के कपडे पहन लिये और चक्की पर बैठकर कोदो दलने लगा।

उधर जुलुमसिह ने क्या किया कि राजा की पोशाक